

४



# ରିଦେହ ୪୩୬



ରିଦେହ ଯେଥିନି ସାହିତ୍ୟ ଶ୍ରାନ୍ଦୋନନ: ମାନ୍ବଶୀମିତ ସଂସ୍କ୍ରତାଢ଼



ସଢ଼ପାଦକ: ଗଜେନ୍ଦ୍ର ଠାକୁର।

[রিদেহ- প্রথম মেথিনী পাক্ষিক গ্ৰ-পত্ৰিকা ISSN 2229-547X Videha e-Journal (since 2000) at [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) ]

ঐ পোখীক সর্দাধিকাৰ স্বৰক্ষিত ঞ্ছিত্ৰি। কাপীৰাগ্ৰে (©) ধাবকক নিখিত ঞ্ছৰমতিকা রিৰা পোখীক কোনো ঞ্ছীক ছায়া পুতি ঐঐ বিকাৰ্টিগ সন্থিত গনেক্ৰুট্টানিক ঞ্ছৰা ঞ্ছীক্ৰিক, কোনো মাধ্যমসঁ, ঞ্ছৰা জ্ঞানক সঁগ্ৰহণ রা পুনৰ্ণুয়োগক প্ৰণানী দুবা কোনো কপমে পুনকপোদন ঞ্ছৰা সঁচাবন-প্ৰসাৰণ নে কএন জা সকেত ঞ্ছিত্ৰি।

(c) ২০০০- ২০২৬. সর্দাধিকাৰ স্বৰক্ষিত/ ভানসবিক গাছ জে সন ২০০০ সঁ য়াল্লিসিটীজপব ছন [http://www.geocities.com/.../bhalsarik\\_gachh.html](http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html) , <http://www.geocities.com/ggajendra> ঞ্ছাদি ঱িকপব ঞ্ছা ঞ্ছৰাে গ জ্ঞানগ ২০০৪ ক পোস্টি <http://ggajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> কেব কপমে গনুটবনেটপব মেথিনীক প্ৰাচীনতম উপস্খিতক কপমে ঱িভমান ঞ্ছিত্ৰি (কিছু দিন তে <http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> ঱িকপব, স্ৰোত wayback machine of [https://web.archive.org/web/\\*/videha 258 capture\(s\) from 2004 to 2016-](https://web.archive.org/web/*/videha%20258%20capture(s)%20from%202004%20to%202016) <http://videha.com/> ভানসবিক গাছ-প্ৰথম মেথিনী বঁনাগ / মেথিনী বঁনাগক এগ্ৰীশেটব)।

গ্ৰ মেথিনীক পলিন গুটবনেট পত্ৰিকা থিক জকব নাম ঱াদমে ১ জনরবী ২০০৪ সঁ 'রিদেহ' পড়লৈ। গুটবনেটপব মেথিনীক প্ৰথম উপস্খিতিক য়াএা রিদেহ- প্ৰথম মেথিনী পাক্ষিক গ্ৰ পত্ৰিকা ধবি পছচন ঞ্ছিত্ৰি, জে <http://www.videha.co.in/> পব গ্ৰ প্ৰকাশিত হোগত ঞ্ছিত্ৰি। ঞ্ছাঐ "ভানসবিক গাছ" জানবৃত্ত রিদেহ' গ্ৰ-পত্ৰিকাক প্ৰজাক সঁগ মেথিনী ভাষাক জানবৃত্তক এগ্ৰীশেটবক কপমে প্ৰয়জ ছহ বহন ঞ্ছিত্ৰি।

(c)২০০০- ২০২৬. রিদেহ: প্ৰথম মেথিনী পাক্ষিক গ্ৰ-পত্ৰিকা (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA. সম্পাদক: গজেন্দব ঠাঙ্কব। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. বচনাকাব/ সঁগ্ৰহেকৰ্ত্ততা ঞ্ছপন মোনিক ঞ্ছা ঞ্ছপ্ৰকাশিত বচনা/ সঁগ্ৰহ (সঁপূৰ্ণ উত্তবদাখি় বচনাকাব/ সঁগ্ৰহেকৰ্ত্ততা মধ্য) [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) কেঁ মেন ঞ্ছেট্চমেট্চক কপমে পঠা সকেত ছ্খি, সঁগমে ও ঞ্ছপন সঁক্ষিপ্ত পবিচয় ঞ্ছা ঞ্ছপন স্কেঁন কএন গেন ফোটে সোহো পঠাঐথি। এতহ প্ৰকাশিত বচনা/ সঁগ্ৰহ সভক কাপীৰাগ্ৰে বচনাকাব/ সঁগ্ৰহেকৰ্ত্ততাক

नगमे छुहि आ जत॒ बचनाकाब/ संप्रवेकर्त्ताक नाम ने खड्डि तत॒ ङ्र संपादकाधीन खड्डि/ सम्पादक: रिदेह ङ्र-प्रकाशित बचनाक रेख-आर्काङ्गर/ धीम-आधावित रेख-आर्काङ्गरक निर्माणक अधिकाव, ए सत आर्काङ्गरक खबराद आ निर्पातवण आ तकवो रेख-आर्काङ्गरक निर्माणक अधिकाव; आ ए सत आर्काङ्गरक ङ्र-प्रकाशन/ प्रिण्ट-प्रकाशनक अधिकाव बवेथे छुथि/ ए सत नेन कोनो बायन्टी/ पाविश्रमिकक प्रारधान ने छे, से बायन्टी/ पाविश्रमिकक ङ्रक बचनाकाब/ संप्रवेकर्त्ता रिदेहसँ ने ङ्रडुथु/ रिदेह ङ्र पत्रिकाक मासमे दू ठाँ खँक निकलेत खड्डि जे मासक ०९ आ १७ तिथिके [www.vidaha.co.in](http://www.vidaha.co.in) पव ङ्र प्रकाशित कएन जाएत खड्डि।

Font/ Keyboard Source: <https://fonts.google.com/> , <https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts> , <https://keyman.com/>

*These are print-on-demand books, send your queries to [editorial.staff.vidaha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.vidaha@zohomail.in). The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, [sales.vidaha@gmail.com](mailto:sales.vidaha@gmail.com)], send your queries to [sales.vidaha@gmail.com](mailto:sales.vidaha@gmail.com). The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2224-547X VIDEHA are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.*

© Preeti Thakur ([sales.vidaha@gmail.com](mailto:sales.vidaha@gmail.com)) Cover design: AUM GAJENDRA THAKUR

VIDEHA:436



समानात्रव पबम्पबाक रिष्ठापति- चिब्र रिदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलान मठन द्वाबा।

*मेथिनी भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत् / हवमत्रः ङ्रङ्गान- मावशीमिते सँस्रताम्।*

**खब्रङ्गम**

ररदर ॡ३ॡ म अंक १ॡ फरवररी २०२ॡ (ररर १ॡ मरस २१ॡ अंक  
ॡ३ॡ)

ॡ अंकमे अङ्कः-

१.१.अंक ॡ३ॡ पर ङुपुपली

गङ्ग

२.१.कनुपनर मर-मेथरनी सरहरेमे उरुनेनुवर नरथ मर 'रररस' ॡरु  
मनक परररररक डुगदरन -२३

२.२.हरतनरथ मर-मेथरनी सरहरेमे तरररनरथ मर ॡरु मनक  
परररररक डुगदरन-१ॡ

२.३.पुणर कुररर मर-अुपनङुतर!

২.৪.পবমানন্দ নান কর্ণ-রাঁজুজীক সৰঁক

২.৭.প্ৰীতি ফ্ৰমাৰী- শ্ৰী নানদের কামত জীক রাঁজির খা প্রতির-২

পত্ৰ

৩.১.জগদানন্দ মা মন্ব -তীনঠা গজন

৩.২.জগদানন্দ মা মন্ব -রীসঠা হাগহ

৩.৩.বরীন্দ্র নাবায়ণ মিশ্র-প্ৰদূষণক প্ৰহাব

*Maithili Literature in English Translation*

4.1.Service-Jagdish Prasad Mandal (Original Maithili Short Story) Rameshwar Prasad Mandal (English Translation)



১.১. ঞ্ক ৪২৭ পব ঠিপ্পলী

শ্বকল মিশ্র

শ্বতি স্বন্দব, দিরা পত্রিকা।

-Arun Misra, PhD 10995 Parsons Road Johns Creek, GA  
30097-1723

শ্বপন মঁতরা [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) পব

পঠাউ।

गद्य

२.१. कन्पना मा-मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्यास' एरुं  
म्नक पविरावक योगदान -२३

२.२. हितनाथ मा-मैथिनी साहित्यमे तावानाथ मा एरुं म्नक  
पविरावक योगदान-१७

२.३. प्रणर ह्माव मा-अपनगति!

२.४. पवमानन्द नान कर्ण-रारुजिक सरक

२.७. प्रीति ह्मावी- श्री नानदेर कामत जीक राजिरुं आ प्रतिरुं-२

୨.୧.କନ୍ପନା ଯା-ଢ଼େ଼ିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ଯା 'ରାସ' ଏ଼଼  
କ୍ଳନକ ପବିରାବକ ଯୋଗଦାନ -୨୩



কল্পনা মা

উপেন্দ্র নাথ মা 'রাস' জীক পবিরাবক শ্ৰুত সদস্যক বিন্নবণ

দর্শন শাস্ত্রক শৌধ-রিশৌষক্ক: ডা. বুবজেন্দ্র ফমাব মা

গ্ৰ একঠা শ্ৰুত সঁযোগ ক্তন জে 'রাস' জীক দোসব বঁানক

কিশৌব জীক বিন্নাহ ভেননি কিশৌবী নামক কশ্চাক সঁগ/

মতনরঁ গ্ৰ গীত জে শ্ৰুতি-

জেহনে কিশৌবী মোবী তেহনে কিশৌব হে....

রিধনা নগাওন জোড়ী কেহন রেঁজোড় হে.....

সে ঝুমু গ্ৰ গীত হিনকে সভ নেন নিখন গেন হো, ঞ্ৰবশঃ

ফিষ্ঠ' রেঁসেত ছনি/ পী.এচ.ডীক উপাধি প্রাপ্ত ডা. ঝ্বেজেন্দব

ফমাব ঞা ঞ্ৰা ঞ্ৰানক জীরনসঁগিনি কিশৌবী ঞা পব/ ঞ্ৰাশ্রয়ক

গপ্প গহো জে মাত্র নামহি ঠা মে নহি, ঞ্ৰাচবণ মে সেহো

শ্রদ্ধত সমানতা দেখনা জাগছ, হিনকা দ্বনু গোঠে মে/ মতনর

জেহনে মাতা-পিতাক ঞ্ৰাছাকাবী প্বত্র বহনাহ কিশৌব

জী, তেহনে ঞ্ৰাছাকাবী, সঁস্কাবী প্বত্ররধ সিফ্ৰ ভেনীহ ঞ্ৰানকব

শ্রফঁগিনি কিশৌবী ঞা/ সাস্ব চাহ পীরিঁ কপ খানী

কবিতথিন, তাহি সঁ পহিনহি প্বত্ররধ হাথ সঁ কপ নেরা নেন

মোস্টেদ/ সাস্ব-সস্ববক প্রতি এহি তবহক কর্তরা নিরঁহন রঁনা

প্রবৃত্তি রিবনে দেখরাঁ নেন ভেঠেঁত ছেঁ সমাজ মে/

দর্শন শাস্ত্র (Philosophy) সঁ পী.এচ.ডীক উপাধি প্রাপ্ত

ক' চুকন ঝ্বেজেন্দব ফমাব ঞা 'নেক্চববশিপ'ক রাঁঠ

धएननि, बोजगब नेन/ बजनगब कानेज मे पहिन पौसुठिं ग  
भेन छननि न्ननकब/ आ बिठायबमेंठ भेननि जे. एन. कानेज  
मधरूनी सँ/ 'एसोसिएठ प्रोफेसब'क पद सँ खरकाशै प्रापूत  
कएने छनाह प्रोफेसब साहरँ/ हिनकब शोधक रिषय छननि,  
"प्राचीन भावतीय राडूमय मे आर्थिक खरधावणा/" मूनतः ७  
"सुमृति नीति के तल्ल"क खधोता छनाह/ मनसुमृति, याऊरनुका  
सुमृति, खत्रि सुमृति, रिङ्ग सुमृति, पवशैब सुमृति, हाबीत  
सुमृति, गौतम सुमृति, जहादि नगभग सब सुमृतिक खधायन  
कएन छनि न्ननकब/ मुदा एतेक गहन खधायन क' चुकन किशौब  
जी सँ गप्प-शैप्प कबैत ँणन मात्र नेन आभास नहि हेतनि  
सामने रूना केँ जे एतेक बास खधायन कएन छनि न्ननकब/  
रूडूड सुथिब चित्त आ 'नौ रानुम' मे गप्प कबताह ७/ जहाँ  
सब तबि नोक खपन खन्प छानक रूखान कबैत नहि  
खघाजए, तहाँ ज खपना दुवा खर्जित छान केँ 'प्रदर्शन'क 'पू'७

সঁ ভেঁঠ নহি হোমএ দেনথিন খ্ৰিষ্টি/ গ্ৰা হিনকব সভ সঁ পৈঘ  
 বিশেষতা ছনি/

ৰিধনা দুাবা নগাওন এহি খ্ৰন্বপম জোড়ীক মাত্ৰ এক গোষ্ঠ  
 সঁতান ছথিন/ হিনকব ধিয়া খ্ৰমিতা ম্যা/ মতনৰঁ হিনকব  
 ৰাজিগত পবিৰাব মাত্ৰ তীন গোষ্ঠাক ছনি/ ম্বদা স্ৰাখী জকাঁ মাত্ৰ  
 খ্ৰপনে তীনু গোষ্ঠা নেন সোচৰাঁক হিনকব প্ৰবৃত্তি কহিয়ো নহি  
 দেখাএন হমবা/ সভ কেঁ সঁগ ন' ক' চনৰঁ, খ্ৰপন পিতা সঁ সীখন  
 ছনি ঝুমি পড়েএ/ গ্ৰা প্ৰবৃত্তি এখনম্ম ধবি দৃষ্টিগোচৰ হোজত  
 খ্ৰিষ্টি, সে আশ্চৰ্যক গপ্প! মতনৰঁ মাতা-পিতাক উপবান্ধম্ম জস-  
 কে-তস রঁনন বহননি পহিনে সন মনোবৃত্তি/

সঁপাদকীয় সূচনা- এহি সিবিজক প্ববান ক্ৰম এহি নিঁকপব জা  
 কহ পড়ি সকেঁত ছী-

মেথিনি সাহিহমে উপেন্দব নাথ ম্যা 'ৰাস' এৰঁ ম্মনক পবিৰাবক

যোগদান-1

মৈথিলী সাহিত্যে উপেন্দ্র নাথ ম্যা 'রাস' এর স্নানক পবিরাবক

যোগদান-2

মৈথিলী সাহিত্যে উপেন্দ্র নাথ ম্যা 'রাস' এর স্নানক পবিরাবক

যোগদান-3

মৈথিলী সাহিত্যে উপেন্দ্র নাথ ম্যা 'রাস' এর স্নানক পবিরাবক

যোগদান-4

মৈথিলী সাহিত্যে উপেন্দ্র নাথ ম্যা 'রাস' এর স্নানক পবিরাবক

যোগদান-5

মৈথিলী সাহিত্যে উপেন্দ্র নাথ ম্যা 'রাস' এর স্নানক পবিরাবক

যোগদান-6

মৈথিলী সাহিত্যে উপেন্দ্র নাথ ম্যা 'রাস' এর স্নানক পবিরাবক

যোগদান-7

মৈথিলী সাহিত্যে উপেন্দ্র নাথ ম্যা 'রাস' এর স্নানক পবিরাবক

যোগদান-৪

মৈথিনী সাহিত্যে উপেন্দ্র নাথ ম্যা 'রাস' এর মনক পবিরাবক

যোগদান-৭

মৈথিনী সাহিত্যে উপেন্দ্র নাথ ম্যা 'রাস' এর মনক পবিরাবক

যোগদান-10

মৈথিনী সাহিত্যে উপেন্দ্র নাথ ম্যা 'রাস' এর মনক পবিরাবক

যোগদান-11

মৈথিনী সাহিত্যে উপেন্দ্র নাথ ম্যা 'রাস' এর মনক পবিরাবক

যোগদান-12

মৈথিনী সাহিত্যে উপেন্দ্র নাথ ম্যা 'রাস' এর মনক পবিরাবক

যোগদান-13

মৈথিনী সাহিত্যে উপেন্দ্র নাথ ম্যা 'রাস' এর মনক পবিরাবক

যোগদান-14

মৈথিনী সাহিত্যে উপেন্দ্র নাথ ম্যা 'রাস' এর মনক পবিরাবক

যোগদান-15

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्नक पबिरावक

योगदान-16

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्नक पबिरावक

योगदान-17

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्नक पबिरावक

योगदान-18

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्नक पबिरावक

योगदान-19

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्नक पबिरावक

योगदान-20

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्नक पबिरावक

योगदान-21

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्नक पबिरावक

योगदान-22

शुडन ररतरर [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) डर डठरड।

२.२.हरतररर रर-ररररररर सरहरररर तरररररर रर ँरु ररररर  
डररररररर रररररर-१ॡ



हिनथ नन

(मेथिनने गुरनगथर ररधरके नर करन देनरहवर, पठकीष

ररधरक शुरशुर/ संपरक-११३०११३०१०)

'पुरभरत'ने पुरकरशरत करीनरथ नन 'करवरण'क वकनर

हसुनररथरत पदक उंपरुगतर

शुरी करीनरथ नन (धरुमपुवर)

करननर रसुतक पुररवभुकर कप करीण तथर हुरु देथर ओकव उंपेकर

কবর সঁর্থা ঞ্চচিত/ কাবণ সঁসাবক শৃষ্টি মাত্র পবমাণ্ণএ সঁর্  
 সঁনন ঞ্ছি/ সঁড়ক সঁজ দেখি কোা কহি সঁর্কেছ জে এহী বাণ  
 সমান ছুদ্র কণমে ওহেন-2 মহান বৃক্ষক ঞ্চাকাব গ্বপ্ত ঞ্ছি/  
 হাথী সন-সন প্রকাণ্ড জনরবৌক শৃষ্টি একে সেন মাত্র সঁ সঁেত  
 ছেঁক/ তহিনা কোনো সঁস্থথা রা সঁঘ প্রাবম্ভে সঁর্ মহান তথা  
 সঁর্মাণ্ণ নহি বহেঁছ/

সঁর্প্রথম কোনো ভারনাক ঁপ্তেত্টি একে রাজিক ছদযমে  
 হোণত ছেঁক/ ঞ্চনন্তব রিচাবক প্রচাব ভেনাসঁ ঞ্চনযাযীক সঁখ্যা  
 সঁড়ি এক সমূহ সঁনি জাণছ/ ঁব এক রিচাবারনসঁী জন সমূহক  
 নামে সঁস্থথা থিক/ ভারনা দৃঢ়মূন নহি ভেনাসঁ নঞ্চ ভয জাণছ/  
 ঁব পঞ্চানুবমে রিকসিত/

ঁদাহবণ রর্তমান ঁঁডিয়ন নেশনন কাঁগ্রেস একবো সঁ্থাপনা  
 প্রাযঃ সঁছত ঞ্চনপ রাজিক দ্বাবা ভেন ছন/ পবন্তু একব

साम्प्रतिक रैभर देखु/ हँ, एतरा अरथु जे संख्या के  
चिबस्थायी तथा सखन रँनेरँक हेतु ओकब संचानक  
के, भगीबथ समान दृढ प्रतिष्ठ तथा प्रयन्शेरीन होयरँ एकान्त  
अरथुक/

कैनेख सन सामान्य देहात मे हरक संघक स्थापना तथा ओकब  
दुवा दुवा 'प्रभात' नामक मासिक पत्रक प्रकाशन मिथिनाक  
उन्नतिक उँजुन भरिषाक सूचना थिक/ यद्यपि प्रभातक सुकप अुद्ध  
अंश तथा अंपबिध्दत अद्धि तथापि उपेअुष्य नहि थिक/ उँदोग  
कयनासँ अ 'प्रभात' मिथिनाक अंशिक्षा बजनिक अछानाककाव  
के नासि रासुरिक प्रभात रँनि सकेँछ/

सम्प्रति, अम्वदृति साहित्यक नाम नहि होअछ/ एकब अादब नहि  
द्वेँछ/ पबन्तु अ, मनोरुति रतमान पाश्राह-रिनासी रातारबणसँ  
दुषित अद्धि/ जाहि दिनमे म्वदृण यन्न नहि छन, कागजक स्थानमे

তানপত্ৰ চনৈত ছন, ওহি দিনমে কী ৱিছাক প্ৰচাব কম ছন !  
 সাহিত্যিক উন্নতি কম ছনেক? ৱিশ্বুৱিখাত সৰ্বশ্ৰেষ্ঠ সঁস্ৰত  
 সাহিত্যিক উন্নতি হাথহিসঁ তানপত্ৰেপব নিখি ভেন ছন/ তখন কী  
 হমবা সৰঁ মৌথিনীক উন্নতি এহি হস্ত নিখিত পত্ৰ সঁ নহি কয়  
 সৰ্কেত ছী ?

সম্প্ৰতিযো চবখা তথা একব দুৱা দেসী ৱস্তুক উছাবপব  
 দৃষ্টিপাত কক! যদি চবখাক দুৱা, নঁকাশায়ব মৌনচেস্টব সন  
 ৱিশ্বুৱিখাত মসীনক প্ৰতিদ্বন্দ্বিতা কয় দেসী ৱস্তুক  
 নিৰ্মাণকনাক উছাব সম্ভৱ হো তঁ কী প্ৰভাতাদিক পত্ৰ দুৱা  
 মৌথিনী সাহিত্যিক উছাব ঋসম্ভৱ মানক চাহী ? কদাপি নহি/  
 একব উপেক্ষা নহি কয়, সৰহিঁ সহযোগ প্ৰদান কবয় তঁ একব  
 ম্বদ্রণো কঠিন নহি বহত/ হম প্ৰভাতক দযনীয দশা দেখি  
 চকিত ছী কাৰণ এহি গামমে ৱিদ্বানক ঋভাৱ নহি/ ফেব  
 প্ৰভাতক গ্ৰ কপ কিষেক! হমব এহি গামক প্ৰহেক ৱিদ্বানসঁ

शुनबोध जे प्रभतक पानन सुचक कपसु कबथि।

तखन एक रूत ! जहूँ तक भय सकय, এখন मैथिनीक दिसि  
ध्यान देरूँ उचित। रूँगनाक रैभर महान छेक। हिन्दीक सेरक  
रूँगत छेक। अंग्रेजीक तँ कथे नहि। सागबमे एक पोखबियोक  
जन प्रदान कयने कोनो नाभ नहि तखन एक चुकक आध चुकक  
सुँ की हो। पबनु चुकबी एके चुककसुँ उमठाम भे जाएत।

यद्यपि हिन्दी बाहुबभाषा थिक। एकब प्रचाब सरुँथा कर्ततरा।  
पबनु এখন नहि। এখন मैथिनी मबि बहन अछि। यारत अण्य  
प्रान्तीय भाषाक समान नहि रूँननि अछि तारत हमबासर तनमन  
धनसुँ एकबे सेरामे एकनिष्ठ बही। अण्यथा एकब अस्तित्व सरुँथा  
सरुँथा असुँभर। हमबा जहूँ तक आशी अछि- कोा राजि एहन  
नहि होयताह जे मैथिनी नहि नीथि सकताह। रिशेष 'रिच्छेश्व  
किम अधिकम'।

ঞশুবসঁ প্রার্থনা জে প্রভাত প্রভাত হো ঔব যরক সঁঘ সর্দা  
যরকে বহয/

(প্রভাত ঞঁক- 06, জুন 1933, পৃষ্ঠা- 21)

করিতা

যরকসোঁ

কাঁচীনাথ না "কিবল"

(ধর্মপব)

হো পৈঘ কাজ কেহনো

সাহস কে নে হড়ারী/

ঔচিল নখি পড়য জোঁ

নির্ভয কদম রঁড়ারী//

-0-

ঞবম্ভ কাজ কয কেঁ

ম্বথ নে কদাপি মোড়ী/

पथमे पड़न बहौ किछु

कोमन कनी की बोड़ी॥

- 0 -

अपना रूते ऋए जौं

नहिँ आनकेँ अठारी।

कर्तरानिष भय पनि

कर्तराता पठारी॥

- 0 -

सङ्घर्म थिक मरक केव

निज देश जाति सेरा।

पहिने भेठत कठिनता

पविषाम किन्तु मेरा॥

-0-

रिश्वास निज श्रमक दृढ़

जाधवि बहत हृदयमे।

दासी रँननि सफलता

বহতীহ পযব ধযনে//

-0-

যারত কধিব গবম ঞ্ছিত্তি

চনু তা "স্বকাজ " কযনে/

প্বনি কয সক্র "কিবণ" কী

জব জব শবীব ভযনে//

---0---

প্রিয়তমসোঁ

প্রভ ! মম জীরন জীর্ণ ঞ্ছীমে

কহিয়া হোযত ভাগোদয/

হায ! ঞ্ছনন্তক ঞ্ছমা নিশীমে

নেত মনোহব চন্দ্র উদয//

-0-

ঞ্ছম্বদিনি-ঞ্ছকণ- ঞ্ছধব পব দেখর

কখন সবন ম্বস্কান/

प्रेम-पथिक मधुकवक स्वनरँ हेम

मधुव याचना गान॥

-0-

रिबह-रिद्धना मृथ चकोवी

निबखत नर/ जोसेनाक प्रकास/

मानतीक पवनकित तन्न तनमे

होयत नर कनिकाक रिकास॥

-0-

द्वतन्त्री मे नहवि उँठत प्रिय-

मिनन बाग केव मृद्व मँकाव/

म्वमन शीर्ष शिथिन तनमे प्वनि

होयत नर जीरन सँचाव॥

-0-

द्वर्दिन-रिबह रिँतत पव प्रुत्त ! कहिया?

होयत द्वदय-गगन श्वुडिबाम/

तीरु श्वथक-गति नयन निर्मवक

ସ୍ରୋତକ କହିଯା ଛ୍ଵେତ ରିତାନ//

-0-

ହୋସତ ଶାନ୍ତ କଥନ ମମ ମାନସ-

ସାଗବ କେବ ତିନ୍ନୋନ ମହାନ/

ପ୍ରିୟତମ ! ଐ ନିବୀତ ଦ୍ଵିଧିଆ କେବ

ମୂକ ରେଦନା କେବ ଧ୍ଵରସାନ//

-0-

ମନାବ

ହେ ସଧିଆ ! ଧ୍ଵାଜମ୍ମାନ ଧ୍ଵାସନ ପତିଆ !

ନିବଦ ନୀନ ଗଗନ ମିତେ ଶୋଭସ

ଚମକି ବହସ ରିଞ୍ଜନତିଆ/

ମିଞ୍ଗବ, ମୋବ, ପପିହବା ଗାର୍ଠସ

ଓବ ଧ୍ଵମାରସ ବତିଆ//

ସୂନ ସଦନ, ରସ ତବୁଶ ଚପନମତି

ପୀଡ଼ିଧି ହିସ ବତି-ପତିଆ/

"कांछिनाथ" आरम्भं स्वधि नेथिन

भय गेन केहन कमतिथा॥

- -0-

वति-पति = कामदेर

(प्रभात श्रंक- 06, जून 1933, पृष्ठ- 21, उपर्युक्त तीनु करिता  
एही श्रंकमे )

याचना

नहि मडगत छी सौथा सजि

सम्पति नहि प्रसता।

नहि रिद्धा यश कीर्ति रुद्धि

रन नहि स्वन्दवता॥

दृढतव हो ग्ग छान प्राण बह

यारत तन मे।

"स्वभमय ग्गश रिधान"

ভান হো সন্তত মনমে//

(প্ৰভাত ঞ্ক- 0৪, ঞ্গস্তু 1933)

ননিত-নিৰ্ৰঙ্ক

ৰেদেহি

দেৰি ! ঔ ঞ্চমন্তুক মণি কী ভেন ? জে ঞ্চশ্ৰ্ৰমানিক সমান ছদয  
-কমন কে ঔফ্লেণ্ণ কৰেত ছন/ নরীন নীন নীবদক সমান মন-  
মযূব কে ঔদ্ভ্ৰান্ত কয দেত ছন/ শীতন শীাবদীয় স্বধাঁশ্ৰক সমান  
নযন চকোব কে ঔন্মত্ৰ কয দেত ছন/ জে সঁগীতিক প্ৰথম  
ধ্ৰুনি, রেদক প্ৰণর, শ্ৰীষ্টিক মূন প্ৰগ্ৰতিক সমান মহান ছন/

জকব মধব ধরনিমা সঁ ঞ্চাগ্ৰষ্ট ভয সূৰ্যঁ জগজ্জননী এহি  
স্থানমে ঞ্চরতীৰ্ণ ভেনি ছনী/ জকব মনোহব প্ৰকাশক ঞ্চনুেষণ  
কৰেত ঞ্চাদৰ্শ কপ মৰ্যাদা প্বৰুষোত্তম, ত্ৰিস্তরন পাতক  
বামচন্দ্র ঞ্চযোধ্যাসঁ পেবহিঁ এক সামাণ্ঠ ঞ্চতিথিক কপমে এহি

हमिक पानक जनकक गृह थायन छुनाह/

मा ! की ओ मणि हड़ा गेन! श्वथरा मादृष कोा हठी सन्तान श्वहौं  
सँ नय कय नञ्ज कय देनक/ जाहि मणिक प्रकाशमे रास श्वञ्जादश  
पुवाणक वचना कय श्वञ्जानाककाव सागवमे निमग्र के पथ  
देखौनक/ याछरन्का-समृति श्रुंखनाक निर्माण कय रिछुश्रुंखन  
(vitchhrinkhal)-शैजिहीन समाज के श्रुंखनित, सम्पन्न  
रँनाय, चिबस्थायी होयराँक योगा रँनौनक/ जे श्रुंखना श्वसँखा  
श्वनाचाव प्रहाव सह कवेत श्वठ्ठारधि ओहने दृठ रँूमि पडेछ/ मा  
! ओ श्वमूना मणि कतय श्वञ्छि/ जकव श्वधुँश्व शीतन प्रकाशमे  
श्वयाचीक साग श्वह्रवित भेन/ रेदान्तरादी श्वकक जन्म भेन छन/  
करिकोकिन रिठ्ठापतिक करिता मन्दाकिनीक मून स्रोतो ओही  
मणिक प्रकाश छन/ जाहि मणिक एक किवण पारिँ सूर्या दिनकव  
कहाय बहन छथि से मणि की भेन/ हाय ! श्वञ्छ ! की कहन ? हड़ा

গেন/ তখন কিষেক নহি কহে ছী জে মিথিনে হড়া গেন/ মেথিনে

হড়া গেন/ কিষেক জীরিত বখনে ছী/

(প্রভাত ঞ্ক- 0৪, ঞগস্তু 1933)

বণ সাজ

সপদি চণ স্তনবি কেনি ঞ্ঠীবি

কয ঞ্ঠামন্তিত তোহি বসিক রব

শীতন যম্বনা তীব/

স্ববত সমব পবতীঞ্ঠা মে ছুথি

সজ্জি সব বতিরীব//

কমব রন্দ কোচ রন্দ কঁচুকী

দৃঢ় কএ ঞ্ঠাচব চীব/

উন্নত উবজ পতাক নিবথি স্তন

সফন মীন সসি কীব//

किबण कहथि रिजयी निश्रय

यदि नहि हयरँ श्रधीव।

बहत थीव के पीव जखन तश्र

छुठत नयज तीव॥

(श्रंक १, सितश्रव-1933)

उपनश्रु श्रंकक श्राधावपव काँचीनाथ मा 'किबण' केव दू श्रानेख  
एरँ पाँच करिता प्रकाशित छनि, सेहो मात्र तीन श्रंकमे। ओहि  
समय किबणजी 26-27 रश्रक छनाह। नेखनी हिनक प्रावम्भिक  
समयक छनि, मुदा ओहि समय हस्तनिखित पत्रिकाक हस्तश्रेपपव  
महश्रपूर्ण श्रानेख निखने छनाह, एहि पत्रिकामे सेहो श्रा मिथिना  
मिहिवमे सेहो। उपश्र्यज श्रानेख श्रा करिताक नीचाँ कोनोमे  
मात्र काँचीनाथ मा (धर्मश्रव) श्रा कोनोमे काँचीनाथ  
मा 'किबण'(धर्मश्रव)।

মৈথিনীক প্ৰসিদ্ধ খানোচক কিবণজীক উপৰ্ণজ খানেখ আ  
 কৰিতাপৰিষ্টিপ্পণী কৰেত নিখেত ছুথি- " কাঁচানাথ  
 ঝা 'কিবণ'ক পাঁচ ঠা কৰিতা আ দৃ ঠা নিৰ্ৰন্ধ প্ৰভাতক বিভিন্ন  
 ঞ্ৰকমে প্ৰকাশিত ঞ্ৰুষ্টি/ এক ঠা নিৰ্ৰন্ধ হস্তনিখিত পত্ৰক  
 উপযোগিতা সঁ সন্মুন্ধ ঞ্ৰুষ্টি তঁ দোসব ননিত নিৰ্ৰন্ধ ঞ্ৰুষ্টি- বৈদেহি/  
 গ্ৰ সাতো বচনা কিবণজীক দ্বনু ম্বজক কাৰা-সঁগ্ৰহ আ একঠা  
 নিৰ্ৰন্ধ-সঁগ্ৰহমে নহি ঞ্ৰুষ্টি, ঞ্ৰুগ্ৰো কতন্ম ম্বদ্বিত ঞ্ৰুষ্টি রা নহি সে  
 কহেঁ কঠিন/ কিবণজীক প্ৰাবম্ভিক কানক কাৰা-সুকপক  
 পৰিচিতিক নেন প্ৰভাতক পেঠীমে সঁেতি কঃ বাখন কৰিতা  
 পঠনীয ঞ্ৰুষ্টি/"

(সন্দৰ্ভ: একন পাঠ-মোহন ভাবদ্বাজ)

**সঁপাদকীয় সূচনা**-এহি সিবিজক প্ববান ঞ্ৰম এহি নিঁকপব জা  
 কহ পঠি সকেঁত ছী-

মৈথিনী সাহিহমে তাবানাথ ঝা এঁ ঞ্ৰনক পবিৰাবক যোগদান-

1

मैथिनी साहित्यमे ताबानाथ मा एरुं स्ननक पबिरावक योगदान-

2

मैथिनी साहित्यमे ताबानाथ मा एरुं स्ननक पबिरावक योगदान-

3

मैथिनी साहित्यमे ताबानाथ मा एरुं स्ननक पबिरावक योगदान-

4

मैथिनी साहित्यमे ताबानाथ मा एरुं स्ननक पबिरावक योगदान-

5

मैथिनी साहित्यमे ताबानाथ मा एरुं स्ननक पबिरावक योगदान-

6

मैथिनी साहित्यमे ताबानाथ मा एरुं स्ननक पबिरावक योगदान-

7

मैथिनी साहित्यमे ताबानाथ मा एरुं स्ननक पबिरावक योगदान-

8

मैथिनी साहित्यमे ताबानाथ मा एरुं स्ननक पबिरावक योगदान-

9

मैथिनी साहित्यमे ताबानाथ मा एरुं स्ननक पबिरावक योगदान-

10

ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ତାବାନାଥ ମା ଏର଼ି କ୍ଳନକ ପବିରାବକ ଯୋଗଦାନ-

11

ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ତାବାନାଥ ମା ଏର଼ି କ୍ଳନକ ପବିରାବକ ଯୋଗଦାନ-

12

ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ତାବାନାଥ ମା ଏର଼ି କ୍ଳନକ ପବିରାବକ ଯୋଗଦାନ-

13

ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ତାବାନାଥ ମା ଏର଼ି କ୍ଳନକ ପବିରାବକ ଯୋଗଦାନ-

14

**ଶ୍ଵପନ ମ଼ତରା [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) ପବ ପଠାଠା ।**

୨.୩.ପ୍ରଶ୍ନର ହମାବ ମା-ଶ୍ଵପନଞ୍ଜତି!



प्रणर क्कडड डड

शुडनगति!

ररत 2/ड सदर के डहिन दसक के दुडर/ शुररनद अखन नखनशुक  
अकशुठर सबकररर डहकडड डे कररुडडड डहथर/ डरन ररडख डहरने  
हिनकर गुर नरकररर डेशुठन दुडनेरु/ शुररनद अकशुठर शुडरसरधरडण  
डडरररर डरं शुररै दुडथर/ डरतरगुर करनडुडडक अकशुठर डरन डे करग  
करडै दुडनरह, डुदर कलदुडु सरन डहरनहे ओ डरन ररुद डुह गेन, गकडर  
सरंगहल डुनक डरगुर-डरशुठर सरहुर रररनर गेन/ कलदुडु दरन दरनुनर-  
डरगुरर डे हरथ-डरैड डरडनखरनु, डुदर करतुर ररत नै गडनेक/  
शुरुततः हरडर-दररर क गरड डकडुनर/ डुदर गरडुडु डे कर  
करडरतखरन/ खेतर-ररुडुर नगुर ओतुते दुडनरनर शुर नै करहलरु केने

ছনাত/ গায়-গোক, ঞাঠা-চক্কী, দোকান-দৌবী কে ঠা  
 ঞাগডিয়া ঞারঁগন ম্বদা কোনা কী কবী কিছু সময় নে ঞারঁয়/  
 ফঠেহানী ঞা ভরিশাক চিত্তা ঞনক মানসিক সঁতনন ডোনরঁয়  
 নাগন ছন/ ও রঁতাহ জেনা কবয় নাগন ছনাত/  
 ম্বদা ঞান্দক মায ধৈর্যক প্রতিমূর্তি ছনীহ/ রঁসী পড়ন-নিখন  
 নে ছনীহ, ম্বদা সঁকঠ কে এহি কানাসাগব মে ও পবিরাবক  
 পতরাব কেঁ থামনে বহনীহ/ ঞান্দ ওহি সময় গঁঠব মে ছনাত/  
 দশমা মে প্রথম শ্রেণী সঁ উত্তীর্ণ ভেনা কহ রঁাদ রিছানক ছাত্র  
 রঁনন ছনাত/ কোনো সামান্য কানপ্ববিয়া ছাত্রক জেকাঁ ঞনক  
 ঞাখি মে সেহো ঞাঞ্জাঞাঠী কানপ্ববক রিশান গেঠ মনকেত  
 ছনেক/ ম্বদা রঁনা কোনো কার্পোবেঠ কোর্চিগক ওহি দ্বন্ড কেঁ  
 ভেদরঁ ঞহঁত কঠিন ছন/ রঁাপক নৌকবী ছুঁঠন তহ কোর্চিগক  
 ঞাস সেহো গেন/ সবকাবী গঁঠব কানেজক পড়াঞ্জ তহ রঁস  
 কাগজী খানাপূর্তি ছন/ তথাপি, মায কতন্ড-কতন্ড সঁ পাঞ্জক  
 জোগাড় কহ ছোঠ-মোঠ ঠাশনক প্ররঁধ কহ দেনখিন্হ/

आनंद ँठव पास केनखिह आ किछु दोस्र सरहक देखादेखी  
 आग्रआग्रठी आ एआग्रठिपनग्र (AIEEE) क फार्म सेहो  
 भवनखिह/ आग्रआग्रठी तह नै भेन, म्दा एआग्रठिपनग्र मे  
 काडंसनिगक रूनारा आयन/ कोनो एनआग्रठी भेठराक नरव  
 तह नै छन, म्दा देशक नामी प्रागरेठ कानेज आ डीमड  
 यूनिरसिठी सबक कठ-आफ निस्रठ मे आनंदक नाम चमकन/  
 म्दा ओहि चमक मे अहाव रैसी छन - फीसक अहाव/ एहन नै  
 छन जे आनंद ए से रैहतव विजन्ठ नै कह सकाय छनाह, म्दा  
 किछु परिवारक स्थिति आ ह्रुष्ट दिशाहीनता के प्रभार सेहो  
 ए विजन्ठ पव छन/

शुक मे त नै म्दा आनंद आ माय के जिद्द आ उंसोह पव  
 रारू गामक जमीन रैचि कह एडमिशन कवारय नैन तेयाव  
 भेनाह, म्दा गामक हितेष्ठी सर अवन असनी वंग देखा देनखिह/  
 केओ जमीन कीनय नैन तेयाव नै भेन, उनठे ताना मावय

নাগন◆ "রৈঁঠা তোবা ফুসিয়া বহন ছৌ, রাঁপ রৈঁবোজগাব ছৌ আ  
 গ্ৰা ডোনেশন দহ কহ গঁজীনিযব রঁনত? কতো দিন্নী-ঢাকা  
 জায কমায নহি কবেত গ!" ঞঁততঃ গঁজীনিযবিঁগক সপনা ওহি  
 ঠাম দম তোডি দেনক/ ঞ্ৰান্দক কিছু সহপাঠী গঁজীনিযবিঁগ মে  
 এডমিশন নেনাহ ত কিছু দিন্নী পকড়ি বহন ছুনাহ/ দেখা-দেখী  
 ঞ্ৰান্দ কে সেহো একঠা ঞ্ৰাস নাগনেন জে নৈ গঁজীনিযবিঁগ ত  
 কিছু সমকঃ পড়াগ্ৰ নেন দিন্নী জায/ ঞ্ৰানক একঠা মামা দিন্নী  
 বহয ছনখিন/ ঞ্ৰান্দ মায কে কহনক/ মায ঞ্ৰপন ভায  
 (ঞান্দক মামা) ক নাম একঠা মার্মিক চিহঁঠী নিখনখিন্/ ও  
 চিহঁঠী ঞ্ৰপন রৈঁঠা কে ভরিষা নেন একঠা রঁহিনক ঞ্ৰপন ভায  
 সঁ কযন গেন ঞঁতিম ঞ্ৰননয ছন/ ঞ্ৰান্দক মায নিযত দিন মে  
 ও চিহঁঠী ঞ্ৰা ঞ্ৰপন সিবমা মে বাখন ঞঁতিম পাঁচ সৈয়া নোঠ জে  
 ও গামক মিশব পঁডীজী সে উঁধাব মাঁগনে ছনিহ ঞ্ৰান্দ কে  
 পকড়া দেনখিন/ ঞ্ৰান্দ ওহী চিহঁঠী কেঁ সঁজো কহ একঠা পেঠী  
 মে কিছু কিতারঁ ঞ্ৰা কপড়া নহ কহ দিন্নী কে ঞ্ৰেন কে জনবন

रौंगी के कचमरँह मे सराव भह गेनाह/ दिन्नीक अजनरी  
डीड मे पद्धगत पाद्धगत अंततः मामाक देवा आगाँ जा ठाढ़  
डेनाह/

मामाक मदेत सँ गगु (IGNOU) मे रीसीए मे नाम निखायन  
गेन/ येन केन प्रकारेँ तकेन नेन आनंद केँ ओहि सामाजिक  
अपमान सँ स्ववङ्गा डेठनेक जे नौकरी नहि कवरँक कावणे  
गाम मे सह्य पड़ितेक/ आनंद ठूसन पढ़ा कह अपन गजब-  
रँसव कवय नागनाह आ किछु समय रँद अपन एकठा साथीक  
संग शैरबिँग कम मे शिक्ठ भह गेनाह/

रीसीए पूर्ण डेना कह रँद असनी सँघरँ शुक डेन/ आरँ घबक  
स्थिति आ समाजक प्रेशेव दन्न आनंद के कन्या पव नौकरी  
के उम्मीद मे सराव डेन छन / आनंदक देह पव पहिबन  
कपड़ा साफ तह छन, मृदा न्नक कान्फिडेँस आ सँरद कौशन  
ओहि चकारेँध डवन आफिस सडक नेन पर्याप्त नै छनेक/

বেফেবেঁসক খভাৰ আ কমজোব পৰ্শনানিষ্ঠীক কাবণে এক কে  
 ৱাঁদ এক গঁঠবৱু সঁ নিবাশী হাথ নগেত ছুনেক/ প্ৰহেক ৱুঁধৰাব  
 কহ খখৰাঁব সঁ ৱেঁকেঁসীক কতবন কাঠৰ, ডীঠীসী ৱঁসক পাস  
 ৱঁনৱাঁ কহ বৌদ মে দিন্নীক কোনা-কোনা ৱৌএনাগ আনঁদক  
 দিনচৰ্যা ৱঁনি গেন ছন/ দিন্নীক কবোন ৱাঁগ সঁ নহ কহ নেহক  
 প্ৰনেস ধবি, আনঁদক নেন গ্ৰ শহব একঠা ৱিশান খজগব জকাঁ  
 ছন/ গঁঠবৱু মে জখন আনঁদ সঁ ঁগবেজী মে প্ৰছন জাগত ছন  
 - "Tell us about yourself," তহ আনঁদক জীহ পব খপনা  
 হিসাৱেঁ যঁত্ৰত বঠন জৱাঁ ত ঁৱেঁত ছুনেক, ম্বদা ওহি  
 কাবপোবেঠেঁ দ্বনিযাক ফৰ্বাঠা ঁগবেজী নহি/ ঙ্গনক কমজোব  
 পৰ্শনানিষ্ঠী দেখি কহ গঁঠবৱু নেনিহাব ম্বসকেঁত ঁক্‌সব কহ্য  
 ছন *OK Mr. Anand, You have good logics and coding skills.*  
*We will call you latter for the results* ম্বদা ককবো কান নে  
 ঁৱাঁয/ ককবো ঙ্গনক কোৰ্ডিঁগ স্কিন সঁ মতনৰঁ নে ছন, সভক  
 মতনৰঁ ঙ্গনক পানিশ কযন জুতা আ কাৰ্পোবেঠেঁ এক্‌সেঁঠ সঁ ছন/

कानक आस मे आनंद एकठा मोर्राजन होन सेहो नह नेने  
 छनाह/ तथापि ओहि मोर्राजन पब नौकवी ज्वाजन कबर्राक नेन  
 कान এখন धवि नै आसन छन/

एही रीच एकठा कंप्यूटर जंस्टीशुंठ मे नौकवी भेठन, म्ददा  
 ओतय नौकवी सं रैसी शौषण छन/ अनक काज छन बोबे दस  
 रजे से बाति आठ रजे धवि रजा सब केँ एमएस-आफिस से  
 नह कह सी-पुनस-पुनस आ जारा सिथायर, आ जखन कोनो  
 सुंठाफ नै बहय, तखन विसेपुशन सेहो सम्हावर/ महिनाक  
 अंत मे जखन आनंद अपन दबमाहा मांगय छनाह, तह मानिक  
 अनका कोनो ने कोनो रहाना रनारय आ अनक काज मे  
 थोठ गिनारय/ उपर से उपदेश दे - "अथनो अहाँक आराज  
 मे ओ प्रोफेशननिज्म नै अछि/ काजुंठ सं कोना रात कयन  
 जागत अछि, से तह सीखु!" आनंद तिनमिना के बहि जाय छनाह/  
 अनक भीतबक जंजीनियर एहि स्थिति पब रिवादिह होगत

ছুনেক।

গাম-সমাজ সঁ কোনো সঁরন নে, কোনো বেফেবেঁস নে ভেঁঠ  
 বহন ছন। এক রেঁব খান্দ গামক একঠা পেঁঘ নোক কে ফ্লেঁঠ  
 পব গেনাহ - গ্ৰ সোচি কহ জে শায়দ কতো কোনো নীক  
 নৌকবীক বেফেবেঁস ভেঁঠ জায়। গোব নাগনা পব ও ভনমান্বষ  
 খান্দ কে এনা কে তাকনা জেনা কোনো মূজিযম মে বাখন  
 র্তমান মে খন্বপযোগী খতীত কে কোনো সঁজোগন রস্তু কেঁ  
 দেখন জাগত খ্ৰুঁডি। ও কহনখিন্ - "খান্দ, তোহব রাঁপ তহ  
 কানপব মে মীন মে ছনাহ নে? ওহনে কিছু কাজ দেখি নেতহঁ।  
 গ্ৰ খাঙাঠী-ফায়ঠী তোবা রুঁতে নে হেতো। গ্ৰ জঁজানিযব রঁনরঁক  
 শৌক কথী নেন পোসনহ?"

খান্দক মোন ভেন জে কহি দিয়ৌক জে "কক্কা, হমব  
 স্কিনসেঁঠ খহাঁক রেঁঠা সঁ নীকে খ্ৰুঁডি," ম্বদা জেরী মে বাখন  
 ডীঠীসী রঁসক পাস খ্ৰা ফঠেঁহান স্খিতি স্কানকা চূপ কবা দেনক।  
 ও নিবাসী ওতহি সঁ রাঁহব নিকনি এনাহ। দিন্নীক সড়ক পব

चनेत खानंद के नागन जे ओ खपनहिँ समाज मे एकठाँ खडूत  
रँनि गेन छथि/ ओ खडूत जेकवा नग पौसा आ पारव ने खडि/  
खँततः, एकठाँ सबकावी सङ्गन मे ठेम्पवेवी कँपाठव ठीचवक  
काज भेठन/ ञा न्नक मँजिन तह ने छन, म्दा एहिँ सँ न्नक  
रँाँ खरख डाररँ भह गेनेक/ ओ देखनखिन्ह जे न्नक किछु  
सँगी-साथी सबकावी नौकवीक तेयावी मे छथि/ खानंद के  
बन्मान सेहो एहिँ दिशँ होरँय नागन/ ओहो खारँ कार्पोवेठ के  
छोडि सबकावी नौकवी के तेयावी केनाज श्वक केनाह/ सङ्गन  
से रँचन समय मे सेन्फ स्रँडी कवय नागनाह/ खानंद मे मेधा  
छनरे छनेक, डेढ सानक तेयावी आ दर्जन डेव पवीखा के  
रँाँद ओ सबकावी नौकवी प्राप्त कह नेनखिन्ह/

जेना-जेना ञा खरँवि गामक एकपेविषा सँ होगत घवे-घव  
पन्नचन, नोकक मिजाज खचानक हिनक पविराव नेन मधव आ  
खपनेती रँना भह गेन/ जे नोक कनक नगरैत छनाह आ

খিধাঁশি কবয ছনাত, ও র়েঁঠা-র়েঁঠা কহি কহ ঞ্বপনেতী  
 জতযর়াক হোড় মে নাগি গেনাত/ রিযাতক প্রস্নারিক র়াটি ঞ্বারি  
 গেন/ কক্কা, মৌসা, গামক ম্খিযা, ঞ্বধিকাবী সভক নগ ঞ্বপন  
 কোনো নে কোনো যোগা কন্ঠা ছন/

নিযতিক চঞ ঞ্বপন গতি সিঁ চনন/ ঞ্বান্দক রিযাত ভহ গেন/  
 রিযাত মে খুর় গাজা-র়াজা ভেনজক/ সমাজক খুর় জুঠানী, র়ব-  
 র়াবাতী, নাচ-গান সভ ভেন/ গাম-সমাজ, সব-ক্ৰুঠুম সভ ঠাম  
 মান-দান ঞ্বপনজতি/ ঞ্বান্দক পিতাজী কে ঞ্বান্দ কে কোনো  
 সীমা নে ছন/ স্নানকা নাগেন জেনা স্নানকব র়িনাযন সভঠা  
 সম্মান, সভঠা খুশী সভঠা ঞ্বপনজতি ভেঠ গেন হোজন/ ম্য়দা  
 ঞ্বান্দ জে পিছনা ঐ সান কে জিনগী দেখনে ছনাত ওকব ঞ্বনভর  
 কে কাবণ স্নানকা এহি ঞ্বপনজতি মে কিছু প্রত্ৰিম নাগি বহন  
 ছন/ ম্য়দা ও ঐ পব ধ্যান নে দহ সমযক ধাবা সিঁগে র়হন জা  
 বহন ছনত/

রিযাতক কিছু সময র়াদ, গামক ওহি ঘব মে জতয ঞ্বান্দক

कोहरँव भेन छन, चोवी भह गेन/ अचम्भा तह तखन  
 भेन, जखन ओहि अपनजति जतरँय राना भीड़ केँ आँखि फेव  
 सँ पथवा गेन/ जे बिश्वेदाव रिवाह नेन अपनजति देखरैत  
 अड़न छनाह आ आगा-पाछा कवय छनह, ओ अ कहि कहँ उनहन  
 देरँय नागनाह जे - "हम तह कहरै केने छनअँ जे हर्ना  
 जगह रिवाह कहँ निख, म्बदा नहि माननखिन्ह/ अ नड़की ठीक नै  
 पकड़नअ/ अठमअतियो ठीक नै अअक/ आरँ  
 भगह!"/ कियो प्बनिस-थाना मे बिपोठ मे सेहो मदद नै  
 केनक, उन्ठे अनँद चोवी के अननाजन बिपोठ निखनखिन  
 ओकवा नह कहँ सबपँच अनम माय-रँप पव दरारँ रँनेनखिन  
 जे जे हेरँक छन से भेनय/ गाम मे प्बनिस एने माहौन  
 खवाप हेतेक/ अँ सभ चक्कव मे नै पडू/ नोक अनक घबक  
 चोवी पव चुस्की नैत चर्चा कवय नागन/ अनँद अपन आफिसक  
 मेज पव रँसन रिचाव कहँ बहन छनाह: अ समाज कोनो राजि

সঁ নৈ, স্নানক সময় সঁ প্ৰেম কৰেঁত শ্ৰুতি/ সময় নীক তহঁ সভ  
শ্ৰপন, সময় খবায়ঁ তহঁ পবছাঙা সেহো সাথ ছোড়ি দেঁত শ্ৰুতি/  
ও গাম, ও সমাজ জে কিছু সময় পহিনে শ্ৰপ্পন হোয়রাক দঁভ  
ভবেঁত ছন, শ্ৰাঙা ও শ্ৰপনগতি কোনা রিনা গেনঙা! শ্ৰান্দ রুমি  
গেনাহ জে ও শ্ৰাঙাও ওহী ঠাম ঠাঢ় ছুথি, জতয সঁ ও দিন্নীক  
ঠেঁন পকড়নে ছনাহ - একদম একসবে/ রঁস শ্ৰান্দক পিতাজী  
ঙা রাঁত নৈ রুমি সকনাহ।

-পুণর ফমাব মা, বাধুবীয় পবীয়া রৌর্ড, নঙা দিন্নী

শ্ৰপন মঁতরা [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) পব পঠাউ।

२.४.पवमानन्द नान कर्ण-रॉरूजीक सरक



पवमानन्द

नान

कर्ण

रॉरूजीक सरक

मोहननान जी खपना कोठवी मे बाखन हसी पव रैसन छनाह

/ म्मनकव रँडकी प्तोम्ल बाखी म्मनका कोठवी मे खारि कखन

ঞ্জরাজ মে কহননি - রাঁরুঁজী, ঞ্জপনেক চায বাখি দেনন্ন ঞ্জি  
 / চায পী নের, নহি তহ সবা জাযত / মোহননানজী ধীবে-  
 ধীবে উঠনাহ ঞ্জা চাযক কপ হাথ মে নেনথি / এক ঘুঁঠ চায  
 পীর হেব চাযক কপ বাখি দেনখিন কিএক তহ চায মে চীনী  
 র়েঁসী পড়ি গেন ছন, ও সদিখন কম চীনীক চায পীরেঁত ছনাহ  
 / ন্ননকব মন উঁদাস ভহ গেন / ও চুপচাপ ঞ্জপনা কোঠবী সঁ  
 নিকনি ভনসাঘব মে গেনাহ, জাহি ঠাম ন্ননকব প্বতোন্ন কাম  
 কহ বহন ছনীহ / ধীবে সঁ ও কহননি - কনিযা , ঞ্জহাঁ জানেঁত  
 ছী জে হমবা ঞ্জগবক রাঁমাবী ঞ্জি তেঁযো এতেক মীঠ চায র়না  
 কহ হমবা দেনন্ন / ঞ্জ স্বনি ও কহননি - রাঁরুঁজী, হমবা নগ  
 এতেক কাম বহেঁত ঞ্জি, হম কোন-কোন রাঁতক ধ্যান বাখী ?  
 চায কে নেন ঞ্জহাঁ ছোঁঠকী কনিযা কে সেহো কহি সকেঁত ছী /  
 ঘবক সভঠা জিম্মেরাবী হমহী উঁঠা নেনন্ন ঞ্জি / মোহননানজী  
 কিছু কহহ চাহেঁত ছনীহ তখনহি ছোঁঠকী প্বতোন্ন জেকব নাম  
 বশ্মী ছন,ওহি ঠাম ঞ্জারি গেনীহ ঞ্জা কহননি - রাহ দীদী ! ঞ্জহাঁ

ଭବି ଦିନ କୋନ ପହାଡ଼ ତୋଡ଼େତ ବଢ଼େତ ଛି ? ଭିନସବ ଶ୍ରୀ ବାତିକ  
 ଭନସା ଶ୍ରୀ କବେତ ଛି ଶ୍ରୀ ରାକୀ ସଭଠା କାମ ତହ ଚମଳି କବେତ  
 ଛି / ଭନସା ଘବକ ମାହୌନ ଶ୍ରୀଚାନକ ଭାବି ଭହ ଗେନ ଶ୍ରୀ ଏକ ରୈବ  
 ଘବ ମେ ଜଂଗକ ଶ୍ଵରୁଶ୍ରୀତ ଭହ ଗେନ ଛନ / ଦୂନ୍ ଦିଶ୍ଵାଦୀନକ ରୀଚ  
 ରାତାରାତୀ ହୋମସ ନାଗନ / ଛୋଠ-ଛୋଠ ଶିକାସତ ତାନା ମେ ରଦନି  
 ଗେନ ଶ୍ରୀ ତାନା ଋଗଡ଼ା ମେ ରଦନି ଗେନ / ରଡ଼କୀ ଦିଶ୍ଵାଦନୀ ଝୁଚ  
 ଶ୍ରୀରାଜ ମେ ଶ୍ରୀପନ ଜିମ୍ମେରାବି ଗିନାରୈତ ନାଗନ ତହନ ଛୋଠକୀ  
 ଦିଶ୍ଵାଦନୀ କହାଁ ପାଛୁ ବହରାନୀ ଛନିହ / ଓ ଲନକବ ସର ରାତକ  
 ଓନାହନା ଦୈତ ଛନିହ / ଗ୍ରୀ ରାତାରାତୀ ସ୍ଵନି ମୋହନନାନଜୀକ ମନ  
 ଶ୍ରୀଓବ ଭାବି ଭହ ଗେନ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀପନା କୋଠବି ମେ ଶ୍ରୀରି ଗେନାହ /  
 ଲନକବ ଡେଗ ଭାବି ଛନ ଶ୍ରୀ ମନ ଭବନ ଛନ, ଜେ ସର ଦିନକ ଦିନଚର୍ଯ୍ୟା  
 ଛନ /

ବାତି ମେ ଦୂନ୍ ଭାଞ୍ଜ ଶ୍ରୀଶୀଷ ଶ୍ରୀ ସ୍ଵମନ ଭୋଜନକ ନେନ ରୈସନାହ /  
 ଏକ କୌବ ଧେନାକ ରାଦ ସ୍ଵମନ କହନି - ଭାଭି, ଶ୍ରୀଞ୍ଜ ତବକାବି

মে নূন দেনাঞ্জা ভনি গেনম্ম ঞ্জি / বাখী কিছু কহহ চাহেত  
 ছনীহ তখনহি ছোঠকী দিখাদিনী তঁজ কসেত কহননি - দীদী  
 কে ধান বহনি তহন নে নূন ডানথিন / হিনকব ধান তহ  
 সদিখন মগড়া মঁমঠ পব বহেত ছৈন / ঞা রাঁত স্বনেত বাখীক  
 ম্বহ গ্বস্‌সা সঁ নান ভহ গেন ঞা কহননি - রৌখা, ঞ্হেঁ ঞ্হপনা  
 ঘবরানী কে সমমা দিযৌন নহি তহ কান্‌হি সঁ ভানস ঞ্হপনে  
 রঁনা নের / ঞা স্বনি ছোঠকী দিখাদিনী জেকব নাম বশ্‌মী ছন  
 ও কহননি - হাঁ দীদী, হম রঁনা নের ঞা ঞ্হেঁ সঁ নীক জকাঁ রঁনা  
 কহ দেখা দেব / ঞা সভ স্বনেত পেঘ ভাঞা ঞ্হাশীষ কহননি -  
 ঞ্হেঁ দূব্বক উঁতবাচৌবী কখনম্ম খমে নহি হোযত / জখন দেখু  
 তখন শ্বক ভহ জাযত ছী / স্বমন সেহো ঞা সভ স্বনি খানা নহি  
 খেনথি ঞা উঁঠি কহ রাঁহব চনি গেনাহ / মোহননানজী ঞা সঁ  
 দেখেত চূপ -চাপ ঞ্হপনা কোঠবী মে ঞ্হাৰি গেনাহ /

বাতি কে এক রঁজি বহন ছন সর নোকনি স্বতন ছনাহ, ম্বদা

मोहननानजक आँखि सँ नीन गायरँ छन / रँव-रँव कबोव  
 फेबैत छनाह, धीबे सँ ओ उँठि रँतती जना कह रिँछोना पब  
 रँसि गेनाह / सोमा मे फनकब घबरानी शीतिक फोषो ठीगन  
 छन, ठाढ़ भइ मने-मन कहनथि - शीति खहाँ देखेत छी ने ?  
 एहि घब मे शीतिक छोड़ि सर किछु खँछि / आँज रँषो थाबी  
 पब सँ रिँना खेने उँठि गेन आ दृष प्तोम्ल एक दोसब सँ  
 नीचा देखारह मे कनिको कसब नहि छोड़नथि / खहाँ कहैत  
 छनमँ जे घब ग्रीँठ पाखब सँ नहि आपसी प्रेम सँ रँनेत खँछि /  
 आँज एहि घब मे प्रेम खम्भे भइ गेन खँछि / हमबा रँमना  
 जायत खँछि जे हम एहि ठाम रँसी दिन नहि सहि सकर /  
 तखनहि मन मे खान एननि जे शीति सदिकन कहैत छनीह जे  
 जखन घब अशीत भइ जाय तहन चुप-चाप नहि रँसराक चाही  
 / घब मे अमन कायम कबरक नैन किछु ने किछु जकब कबरक  
 चाही / ओ अवन पबान कपड़ा मोबा उँठेनथि जाहि मे किछु

কাগজ - পতৰ, কিছু নুখা আ দৰাঙা নেনথি / ৰিছৌনাক নীচা  
 সঁ চপ্পন নিকানি পহিবনথি / ঞপনা কোঠবী সঁ ধীবে ধীবে  
 ৱাহব ঞ্খাৰি গেনাহ / মোহননানজী ঞপন কাহ পব মোবা ঠাঁগি  
 ঞ্হবিয়া বাতি মে গনী সঁ ৱাহব ঞ্খাৰি গেনাহ / ঘব মে ককবন্ম  
 কোনো খৰঁব নহি ভেন / ভিনসব জখন ঘবক নোকনি জাগনথি  
 ঞ্খা মোহননানক প্তোম্ এক কপ মে কম চীনীক চায় ৱনা কহ  
 ভবন মন সঁ মোহননানজীক কোঠবী মে এনথি তহন ও দেখেত  
 ভ্খিন জে কোঠবীক দবৰাজা থোড়েক খুন ঞ্খি / কোঠবীক  
 ঞ্ধব ঞ্খাৰি মেজ পব চায়ক কপ বাখেত ও কহননি - ৱাৰুঁজী,  
 ঞ্খলক চায় ঞ্খি, ম্বদা কোনো জৱাৰ নহি মিনন তহন ৱিছৌনা  
 পব নজবি ঘুমা কহ দেখেত ভ্খিন জে মনকব সস্ববজী ৱিছৌনা  
 পব নহি ভ্খি / মনকব মোবা সেহো নহি ঠাঁগন ভ্খন / বাখীক  
 মাথ পব চিঁতাক নকীৰ উভবি গেন / ও জোব সঁ ঞপনা  
 ঘবৱানা কে ঞ্খাৰাজ দেনথিন - স্নেই ভ্খী ? ৱাৰুঁজী ঘব মে নহি  
 ভ্খি/দেখু কোন ঠাম গেনথি ? ঞ্খাশীষ কহননি জে এতেক

ভিনসব কোন ঠাম গেন হেতাহ ? রাঁহব ঘুমরাক নেন গেন  
হেথিন থোড়েক দেব মে ঞ্চারি জেতাহ / ভহ সকেঁত ঞ্ছিত্তি কোনো  
মঁদিব র পার্ক মে গেন হেতাহ / ঝুঁত মে নীন সেহো কম ঞ্চারেঁত  
ঞ্ছিত্তি /

মোহননানজী বাতি মে একঠা হোঁঠন মে বকি গেনাহ / ভিনসবে  
ঞ্ছপন সঁগী জিনকব নাম বমেশঁ ছন ম্লনকা ঘব পব ঞ্চারি ঞ্ছপন  
জাযদাদক সম্বন্ধ মে রাঁত কেননি / বমেশঁ ওহি ঠামক নামী  
রকীন ছনাহ / মোহননানজী কহেননি হমবা জীতা জিনগী হমব  
জাযদাদ পব কিনকো হক নহি হোয তকব রারস্থা কহ দিঞ্ছ  
ঞ্ছা একব রাঁদ একঠা রসীযত ঝঁনা দিঞ্ছ তাকি হমব দূন ঝেঁঠা  
ঞ্ছাপসী তান মেন সঁ জীরন রসব কহ সকে / এহি রাঁত পব  
রকীন সাহেঁ কহেননি - ঠীক ঞ্ছিত্তি , হম কাগজ তেঁযাব কহ দেব  
/ চুঁকি ঞ্ছলৈঁক সভঠা জাযদাদ সুঞ্ছর্জিত ঞ্ছিত্তি তেঁ ঞ্ছলৈঁক জীতা  
জিনগী কিনকো ঞ্ছধিকাব নহি ছেন / জহঁ ধবি

ରସୀୟତକ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଶ୍ରଦ୍ଧି ହମ ରିନା ଦେର / ମନକା ସି ରାତଚୀତ କହ  
 ଓ ଘବ ପବ ଚନି ଏନାହ / ଚୁକି ଓ ଘସୁସା ମେ ବାତି ମେ ଘବ ସି  
 ରାହବ ଗେନ ଛୁନାହ ତେ ଓ ଚୁପ-ଚାପ ଶ୍ରପନା କୋଠବୀ ମେ ଶ୍ଵାରି ଗେନାହ  
 / ଘବ ଏନା ପବ ବାଖୀ କହନି - ରାଉଜୀ, ଭିନସବେ ଚାସ ନହ କେ  
 ଶ୍ଵାସନ ଛୁନମ୍ମି ତହନ ଶ୍ରହାଁ ନହି ଛୁନମ୍ମି / କୋନ ଠାମ ଗେନ ଛୁନମ୍ମି ?  
 ଏହି ପବ ମୋହନନାନଜୀ କହନି - କୀ କମ୍ମା କନିସା, ଶ୍ରହାଁ  
 ସଭହକ ଓତାବା ଚୋବୀ ସି ହମ ପବେଶାନ ଭହ ଗେନମ୍ମି ଶ୍ରଦ୍ଧି / ଘବ  
 ଶ୍ରଶୀତ ଭହ ବହନ ଶ୍ରଦ୍ଧି /ହମ କୀ କବୀ ଜେ ଘବକ ସର ନୋକନି ନୀକ  
 ଜକାଁ ବହେଥି / ଗ୍ର ଶ୍ରନି ବାଖୀ ଚୁପ-ଚାପ ବହି ଗେନୀହ /  
 ମୋହନନାନଜୀ କେ ନେନ ଚାସ ରିନା କହ ଦେନଥିନ, ଚାସ ମେ କମ ଚିନୀ  
 ଛୁନ / ମୋହନନାନଜୀ ଚାସ ପୀର ଶ୍ରପନା ରିଢ଼ୋନା ପବ ରୈସି ବହନାହ  
 /

କିଛି ଦିନକ ରାଦ ମୋହନନାନଜୀ ଶ୍ରପନ ରିଢ଼କା ରୈଠୀ ଶ୍ରାଶୀଷ କେ  
 ରିଜେନଥିନ ଶ୍ରା କହନି - ରୌଶ୍ରା, ହମ ରିଢ଼ ଚିତିତ ଛି ଜେ ଏହି

घब मे ककबो सँ कोनो मेन जोन नहि बहेत श्रद्धि ताहि सँ  
हम चिँतित छी / एहि पब आशीषजी कहनि - राँरूजी, की कएन  
जाय ? केओ कोनो राँत मानराक नेन तेयाब नहि छथि /  
मोहनानजी कहनि - ठीक श्रद्धि, जोँ श्रहाँक राँत नहि केओ  
मानेत छथि तहन हम कोनो ने कोनो उपाय श्ररथ कबर /  
श्रहाँ पैघ छी तेँ श्रहाँ सँ कहि बहन छी /श्रहाँ एक रँब सर सँ  
कम, जोँ श्रहाँक राँत नहि मानताह तहन हम सोचर /

एक दिनक राँत श्रद्धि आशीषजी स्वमन सँ कहनि - छोष्टे,  
राँरूजी हमबा सँ कहि बहन छुनाह जे घब मे मेन-जोनक कमी  
श्रद्धि, तेँ हम चिँतित छी / हमबा रिचाब सँ श्रमँ श्रपना कनिया  
सँ कम जे घब मे कोनो तबहक मगवा मँमठ नहि कबथि /  
हमम श्रहाँक भाँजी सँ कहि बहन छी जे घब मे कोनो तबहक  
रिराद नहि कर / घब मे जतेक शीँति बहत ततेक नीक बहत  
/ स्वमन कहनि - ठीक श्रद्धि तेया हम कहेत छी / घब मे श्रारि

স্বমনজী স্বপনা কনিয়া সঁ সভা ঝাঁত কহনখিন / ম্বদা স্নানকব  
 কনিয়া উন্ঠে স্নানকা কহে নাগনখিন জে দীদী ভবি দিন ঝেঁসন  
 বহেত ছুখিন স্বা হম ভবি দিন খঠেঁত বহেত ছী / গু কোনা  
 হোযত ? জেঁ দিক্কত স্বষ্টি তহন দূন স্বাদমী স্বপন-স্বপন কাম  
 কব / দীদী কেৱন ভানস কবেঁত ছুখিন তকব ঝাঁদ সভা কাম  
 হমবা পব ছোড়ি দেঁত ছুখিন / ঘব সাফ কবনাগু, ঝঁবতন সাফ  
 কবনাগু, নুখা রাশিং মশীন মে বখনাগু স্বা স্বখেনাগু সভা  
 কাজ হম কবেঁত ছী তকব ঝাঁদ কখনো-কখনো তবকাবী সেহো  
 ঝঁনা দেঁত ছী / হম এহি সঁ ঝেঁসী নহি কহ সকেঁত ছী / বশ্মিক  
 গু ঝাঁত স্বনি স্বমনঝাঁঁ চুপ বহি গেনাহ / দোসব দিশ স্বাশীষজী  
 স্বপনা কনিয়া সঁ কহননি জে ঝাঁঁজী হমবা কহেঁত ছুনাহ জে  
 ঘব মে সদিকখন ঝড়মঁডন হোযত বহেঁত স্বষ্টি / তেঁ হমব ঝিচাব  
 স্বষ্টি জে সর কেও মেন - মিনাপ সঁ বস্ন / এহি পব স্নানকব  
 কনিয়া কহননি জে হম কী কবী ? ভানস কবনাগু স্বা ছোড়ি  
 ঝঁচাক সঁভাননাগু মে কী পবেশানী হোযত স্বষ্টি সে হমহী

জানৈত ছী / ছোঠকী তহ ঞখন ঞখুন্না ছথিন / ভবি দিন ফোন  
পব রাঁত কবেত বহৈত ছথি / হম রাঁচাক নহ কে পবেশান ছী  
/হমবা সঁ জতেক সম্ভর হোযত ঞছিত্তি ততেক হম কবর /

এক দিনক রাঁত ঞছিত্তি বাখীক নৈহব সঁ কিছু নোকনি ঞযন ছন  
/ বাখী ভানস রাঁনারৈত ছনীহ / তখন ঞনক রাঁনক কানহ নাগন,  
তহন বাখী বশ্মি সঁ কহনখিন - কনিযা কনি ভনসা ঘব মে  
তবকাবী চনা দেৱ নহি তহ জবি জাযত, হম রাঁখা কে দেখেত  
ছী / এহি পব বশ্মিজী কহননি - দীদী, হম ছত পব কপড়া  
পসাবহ জাযত ছী / ঞাঁচ কম কহ দিঞছু তবকাবী নহি জনত  
/ ঞ স্বনি বাখীক নৈহবক নোকনি কহননি - রাঁচী  
ঞহাঁক দিঞাদিনী রাঁড্ড ঠস-ঠস রাঁজৈত ছথি / এহি পব  
বাখী চুপ ভহ গেনীহ / তখন তহ কোনো রাঁত নহি ভেন ম্বদা  
জখন বাখীক নৈহবক নোকনি চনি গেনথি তহন ও ঞাশীষ রাঁরাঁ  
সঁ কহনখিন - হম বশ্মি সঁগ নহি বহি সকেঁত ছী / দূন ঞাদমী

স্বপন - স্বপন দেখু / স্বাৰ ভানস স্বনগ -স্বনগ ৰঁনত এক ঠাম  
 স্বাৰ সম্ভৱ নহি স্বষ্টি / এহি ৰাতক জানকাৰী মোহননানজী  
 কে ভেনি তহন ও স্বাগি ৰাঁৰুনা ভহ গেনাহ / ও স্বপনা দৃন  
 ৰানক কে ৰেঁসা কহ কহনি - ৰৌশ্বা , হম কী স্বনি বহন ছি ?  
 দৃন কনিয়া কহেত ছথিন জে স্বপন স্বপন চূনহা স্বনগ কহ নিশ্ব  
 /এহি পব স্বমনজী কহনি - হাঁ ৰাঁৰুজী, ভাভী কহেত ছনখিন  
 জে জোঁ দিক্কত হোষত স্বষ্টি তহন চূনহা স্বনগ কহ নিশ্ব /  
 মোহননানজী কহনি - হমবা জীতা জিনগী গ্ৰ নহি হোষত /  
 হমবা স্বষ্টেত এহি ঘব মে দ্বগ্ৰাঠী চূনহা নহি জনত / জিনকা  
 দিক্কত ছেন ও স্বপন কিবাযাক পব দোসব ঘব নহ সৰ্কেত  
 ছথি / গ্ৰ ৰাত স্বনি দৃন ভায পবেশান ভহ গেনথি / ও স্বপনা  
 স্বপনা ঘবৱানী সঁ কহনি - ৰাঁৰুজী হমবা দৃন ভাগ্ৰ কে ৰুনা  
 কহ গ্ৰ ৰাত কহি বহন ছনাহ তেঁ স্বহাঁ সৱ মিনজ্বনি কে বন্ম  
 নহি তহ ৰাঁৰুজী স্বপন কোনো ফেঁসনা কবতাহ / বাখী স্বা বশ্মি  
 সোচনথি জে জোঁ এহি ঘব সঁ ৰাঁৰুজী নিকানি দেতাহ তহন

কোন ঠাম জায়র ? গা সোচি দূন্ব দিখাদিন মিন-জ্বনি কে বহে  
নগনীহে ।

স্বপন মঁতরা [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) পব পঠাউ ।

২.৬.প্রীতি ফমাবী- শ্রী নানদের কামত জীক রাজির শ্রা প্রতির-২



প্রীতি ফমাবী

## শ্রী নানদের কামত জীক রাজিগ্ন খা গ্রতিগ্ন-২

(ঞমশঃ কেঁ রাদ শৌষাঁস )

নান দেৰঁ জীক মায শ্ৰীস দমা বোগ সঁ রঁর্ষাকানিন তীনমাস সরঁ  
 শান রঁঁবাম পড়েত ছনীহ/ তেঁ ১৯৭৪ মে রঁঁঠী 'ক' রিযাহ -  
 বস্বখাব কযনীহ খা ১৯৮০ গ্ৰাংমে জেঠ রঁঁঠাক রান রিযাহমে  
 দেখ নেনীহ মাথ পব মৌব/ সে ২৬ ফবরঁবী কেঁ খড়েত্থা নিরাসী  
 রঁতছ কামতি কেব জেঠ রঁঁঠী সূমিত্রা উর্ফ ম্বনী সঁ পাণীগ্ৰহণ  
 জে ভেনেক সে রব - কনিযাঁ কেঁ কোনু রঁধকে মোন নহি  
 বহনহি/ উপবাহেঁবকে গ্ৰ জাতীয় মাগ্জজন পবিরাব গীবহরঁাস্ব -  
 স্বখিতগব বহখিন/ ভীখব কিযোঠকে প্বত্র ভেনখিন  
 গঁগাবাম,জিনকা দূ প্বত্র খজরঁ খা রঁতছজী ভেনখিন/ রঁতছজীক  
 সাস্বব বহনি মোহনা, পনৌ রঁুনিযাক প্বত্র মঁগনু শ্বমীন খা প্বত্রী  
 ঞমশঃ ম্বনিযাঁ,বমিযাঁ খা সোনিযাঁ ভেনখিন/ হম শ্রীমতী ম্বনী  
 দেৰী খা শ্রী নান দেৰঁ কামত জীক ছোঠ খান্বরঁাশিক প্বত্রী ছী/

हमबा चावि जेठ भाय छुथि -: स्वभाष, केनाश, आकाश अमीन आ  
नरहश/

श्री कामतजी'क पन्नरी प्रकाशनसँ रहवाएन मेथिनी भाषामे  
निरुंध - प्ररह - समानोचना पोथी " दिरा दृष्टि " २०२२ मे  
प्रकाशित भेन,तकव पाँचम् संस्कवण निकेन गेन छेक/ ओहिके  
आग्रा एस री एन ११८-१३-१३१३७-३३-१ छे,जाहिमे कामत  
जीक मातृक गम्हविषाक रँशारनी ( जेनवेशन ठेरून ) छात  
भेन अछि -:

कपण आ छुतन पेशवान नावायण उँडावी पोखविषा हसामी  
बहथिन/ कपनकेँ तीन पत्र अमशः तीखव,सौनी आ नहमण  
छुनथिन/ सौनीके सेहो तीन पत्र भेननि अमशः मोती,सँजीत  
आ जयनानजी/ सँजीत केँ दू पत्र अमशः मखसुदन ओ पृथ्वी नान  
आ पृथ्वी अमशः धनमा,दनमा आ अरबमान देरी छुनथिन/ अरबमान  
देरी हँनीक मयठुअर - रँपठुअर खनिहा रँरूचन सँ रिघाहन

গেনীহ/ রাঁচুচন্দ রাঁরাজী দ্বধা রৌঞ্চর বহথিন থা কিশৌবারস্থা  
 সঁ সিধ্দ থ্বকক সঁগহেত কেননি তথা ঞ্বনেকো তীর্থস্থনক যাত্রী  
 রঁননথি/ চৌথাপনমে নান দেৰঁজী মায - রাঁচু কেঁ রৌত্বনাথ  
 ধাম,জগ্ননাথপ্ববী,কানী মায কনকত্তা থা সিমবিযা গঁগাজীক  
 দর্শনার্থ ভ্রমণ কবএ নেন ন' গেন বহথি/ তাহিকহ গাউঁ ঞ্চারি  
 খূঁ নীক তবহেঁ ভোজভাত দেনহি/ শ্রীকামত জী সূর্য ঠাফব  
 ঞ্বন্থন চন্দ্র জীক ভরা স্থান সতসঁগ নগব ঞ্শ্রম - দেৰঘব  
 ঞ্খা পঠনাক বাজীর নগবমে রিহঁগমযোগ কেব সূতন্ব দেৰজী সঁ  
 দীক্ষা নেত প্বন: রৌদিক বীতি সঁ কর্মকাঁড রাঁচু জীক থা সানেভবি  
 রান মাতাক ঞ্বথ শ্রাফ্ কর্ম কযননি/ গ্রামীণ ঞ্চেত্রেমে চনন ও  
 মাগ্গতাক ঞ্বন্থসাব খূঁ প্রতিগ্গা ঞ্বর্জন কযননি/ পবঁচ দ্ববস্থকে  
 রিদ্বতজনকে নজৌবমে হিনক সমাজরাদী ছুরি ধমিন নহিঁ  
 ভেননি, সে কোনা কহি সকেঁত ছী/

১৯৮৪- ৯৭ গ্ৰা০ মহ সূর্য সেরী সঁস্থা - জগতপ্ববক সবকাবী  
 ঞ্বনৌপচারিক শিগ্গামে রঁতৌব দূ সান পর্যরেঞ্চক পদ পব

श्वकतुव सेरा कोशीरैनुंठमे बहि देने छथि/ हिनके गाममे  
 सेहो केरठ समाजमे पहिन पजेरूक मकान बहनि, ओहिमे  
 भोव सान्न ह्रीमे पूरूावि ठौनक रँछा सरँकेँ शिखा दान देने  
 बहथि/ एहि सरँ जियाकनाप सँ हिनक राजिन्न निर्माणमे रँशै  
 निखाब श्वयनहि/ देहाती ३५३ सँ प्रकाशित मातृभाषा मैथिनीक  
 त्रैमासिक पत्रिका 'कोसी - सन्देश केँ आर्थिक मदत देरूक  
 उददेश्य सँ माय रारूक रँवथीक रिच्छापन धवि कबैत बहनाह  
 श्वद्धि/ गामक छैठब्रत घाठ पब चून - रूनिर्चिग पोडव छिठ आ  
 फिनाजन - डिठौन दुरा मुखामन्नी पना सँ पूरूभव छिबकार मिशिन  
 पीठपब नाधि स्प्रे सँ कबैत ओ किन्नो- किनावा पब प्रधानमन्त्री  
 सड़कमे कतेको छैकूठब माँठि कीन श्वरदान कय यशके भागि  
 रँननाह/ एहि ञममे केबाक रूँठि आ रूसक मंगनी कयनहाबकेँ  
 निबाश नहि कयननि/ ए उदावताक प्रति श्वदुत धावणा जन-  
 जनके हिनका प्रति रँनन बहनि हेन/ गामक होबी पारैँन -

জুড়শিতন , গুঞ্জাম্বাঠীমে ঞ্গাণু রঁড়িকয সহভাগিতা দৈত বহনাহ  
 ঞ্ছি/ জতরৈ শ্রুধা সঁ গণতন্ব দিরসকে সমাবোহ,সুাধিনতা  
 দিরসকে বাঙ্কবিয তিহাব মনারৈথ, ততরৈ শ্রুধা ঞ্চা রিশীরাস সঁ  
 দাহা-তজিযাকে ম্বহবম ঞ্চা কানী পূজা ঞ্চায়োজনমে সাম্বদাযিক  
 ভারে সময় দৈত বহনাহ ঞ্ছি/ গামক ঞ্ছগ্যাম,নরাহ ,সবোসুতী  
 পূজন , যচ্চ রা কিনকো রৈঠীক সামঁজস্ব রিরাহ হোয - মায  
 রাঁপক গৈত হোঞ্জ ; সরঁমে শঁজিভবি দাসোদাস বহৈত ছুথি/  
 গ্রাম স্বধাবকে যথেষ্ট ধেহ সঁ নগড়া- ফসাদ শঁনঠারৈমে প্ববণা  
 গ্রাম রিকাস কমিঠীমে বৃধুদজন পঁচক রীচ হবিযব কেসরঁানা  
 ওযেহঠা রাঁদমে জড়মিমব বহৈত রঁুন্মাবতকে তসফিহা নিখেত  
 ছনাহ/ ঞ্চাৰঁ ওহি স্রুং পঁচ নোকনিক রৈঠা- ভাতীজ ঞ্চা পোতা  
 গামক মঁমঠ নিপঠাবামে পবিস্থিতিরশঁ নাগন বহৈত ঞ্ছি/  
 কতেকো ফৈসনা কবযমে গামক প্রতিনিধি রঁনি রাঁহব  
 পৈনচেতীমে- মৈঁনহী রঁগবাহা, গম্বহবীযা, হড়বী ,পববী ঞ্চা  
 সোনরঁৰ্ষা সহিত রঁন্নতো গাম গেন ছুথি ঞ্চা কৈথী ঞ্ছব কেব

करँना - खतियान पठने छथि। ए बचनामेक काज सँ हिनका एक छोटमोठ कोशीके गाँधीजी धवि कहय जा नागन,जे रिञ्जति मैथिनी पोथी ,खाञ्ज एस री एन ११४१३४४११७१४ मं पाठक पठने होयत। एहि उपेवित पोथीमे श्रीकामत जी किसान हीतमे रमी कम्पोञ्ज खाद आ घबेनु कृषीव उद्योग रँरत खनेको वस्तु दखेने छथि। श्रुजनक काज हिनक श्रुतियन्त्रबमे बहैछ। तान्न नेन ए रँव रँखत पब जथोमे यात्रा धवि कबैत खपन नघु साहित्यके दुवा जन - जनमे सन्देश देरामे समर्थ भेन छथि। एहि तबहक साहित्यिक जागककता दोसब कियो कोसी ञ्जएमे नहिँ कयनाह हें। समय- समय पब एशिया मैत्री- खनियमित कानिन पत्रिका, समता प्रेस सरिस आ कतेको रूनेठिन तथा पविपत्र- फ्लान्डव दुवा नोकमे रैञ्चानिक - बाजनेतिक जागृति पसाबैत सन् १९९७ सँ खपन कर्तराक निर्हण कबैत खरिँ बहनाह श्रुति। ए नघु पत्र

- পত্রিকা বৃহত্ত পোথীক ঞপেঞা র়েসী ঞসেবদাব সামাঞ নোকমে হোঙত ঙ্কেক/ ওহি সমান র়সপা সঁ ১১১- কিশনপুব রিধান সভা সঁ ঞা র়াদমে দবভঁগা স্নাতক নির়াচন ঞেত্র সঁ ঞন্তথী র়নয নেন উত্তত ভেন বহেথি/

র়াপূ চম্পাবণ সলাগ্রহ শতাল্লীকে ঞরসব পব শ্রীকামতজী মোতীহাবী জাকয কার্যক্রমমে ভাগ নেননি/ সঁগহি মহামো গাঁধী জীকে ১৬০ম্ জযন্তী পখর়াবা ঞরসব পব এক মেথিনী পোথী স্মৃত্ততা পদযাত্রা - ২০১৯ মে পন্নরী প্রকাশন র়েবমা সঁ ছপৌননি ,জাহিক ঞাঞ্জাএসর়ীএন ৯৭৮৯৩৮৮৮১১২৬৪ ঙ্কেক/ ঐ পোথীক নেখক নানদের জীকে এক গাঁধীরাদী কপে নোক র়ুময নাগননি/ ঐ পোথীমে স্নানক নাগপুব যাত্রাকে সঁগে মহাবাঞকে গাঁধীজীক ঞ্রাশ্রম- র়র্ধা ঞা ঞ্রাচার্য রিনোরা ভারেকে র়্বন্ধ রিত্তা মঁদিব - পরনাব তথা গাধিজম ঞর্থশাস্ত্রী জে.সী. ফমাবপ্পাকে মাঁগনর়াড়ী কেব যাত্রা কযনে ছুথি/ সার়বমতী 'ক সঁত সঁ সিখু ১০ গুব ঞা একাদশ ব্রত পাঠ মনকে মোহি নেত ঙ্কেক/ কামত

जीक फेसबुक पेज पब गठुचिबौनी'क सुडवण सेहो ँक यलतुरल  
 वृतुतलत थलकेक/ सलडलत: सरुकेँ २ॡ घुंठलके दलन-वलतुरल रूडडन  
 होयत, डुदल कलडके रलरवण शुनुसलवे हलनकल नेन रेँशलये  
 घुंठल होडत सन नगेत शुडुडल/ शुल तेँ सेँडुडलक सुँसुथल , सुँरुँसेरुी  
 सुँगठन केव नोकसडुत ओ वलडनलतलक डुठकलडुके पेघ सडडक  
 शुनुवलन शुल हेव सरुँसुँ शुनग हठुठकेँ डे सडलडकडुी कपेँ शुपन  
 सडड डनसेरल ओ सलहल सेरलडे नगेननल, तलहलक डुनलकन  
 कडनल सुँ डलठक सुत: रूडुडल डलँरुँ डे हलनकल नेन कुनो  
 घडुडलडे शुतलवलडुड सडड ठलके तुँ नहल रूँठल डलडुडुड/ डडह  
 सडुडडतल ओ डुरलरुँततल हलनकल रूँडुडल हलड शुल सलडुडठलकल ओ  
 रूँडुडसुीव वोलुगुकेँ डुगलकड सलडुडहलकतलडे शुवरेँधकेँ धकेनने  
 वहेत डुँके/ डहन ँहल डुँतलकलरलदुी डुगडे शुलरुँथलक हलनलत डव  
 सरुँ कलडुडु नलरुँडव कवेत डुँके,तहन ँहन कलड सरुँ कवेत तवह-  
 तवहके डुडलथुी - डतुरलकल डुडलडरुँ, शुल ँ नेन डुडलडलखलनल ओ

প্রকাশনক দৌড় নগারৈত ঞ্চপসিয়াঁত বহনাঞ এক রিশেষ জুনূন  
 কেঁ দর্শারৈত ঙ্কেক। এহি তবহেঁ পবিরাবিক সদস্যক মনাহী  
 কখনোপবান্ন বাতিদিন খণ্টেঁত বহেঁত, সরঁপ্রিয় রঁনন দেখাঞড্ড  
 ঞ্চা সবক্ৰষ্টমক ওতয পবিত্রমণ ; চুনারী ঞ্চভিয়ানমে সত৩ নাগন  
 বহনাঞ এক ঞ্চাদর্শ উপসখিত কবেঁত হোখি। গামক এক  
 পদধাবী রাজি রঁজনাহ জে " হম সরঁ জোঁ হিনকা জহাঁতি ঞ্চার্থিক  
 রৈঁবরাদি কবরঁ তঁ ডিহো রৌহা জাযত ঞ্চাওব ভীখমঁগা রঁনি  
 জাএরঁ/" ঐ ঞ্চানেখমে হিনক গ্রতিন্ন পব প্রকাশ দেরঁ রিস্তাব সঁ  
 সঁভর নাহিঁ ভ ' সকন।

একণ্টা হিনক নিখন প্বস্তিকামে সমাজসেরী এঞামূন হক  
 সাহেঁরঁক উফ্রবণ ঙ্কেক- "জোঁ হমবা সরঁকে রীচ এহন ঞ্চহর্নিশ  
 কার্যকর্তা সমাজ শিষ্ণকে ঞ্চগ্ব্চা বহেঁত তঁ ছোঁঠমোঁঠ গাঁধীজী  
 রঁনাকয বখিতল্ল।" পড়োসী গাম হড়বী (কবীহব) মেঁ ম্বসহব  
 সম্বদাযকে রঁচা নেন মহামহিম বাজাপান রাঁস্তে ভুমিদান কযকেঁ  
 রঁান রিছানয ঞ্চারঁভ কবৌননি, হঠনী মংরিং উঞ্জেমিত ভেনাপব

हाङ्गसुह्न दिनके पूर्जके जमीनमे उँचतव माधामिक रिठानय  
 चनेत छन्हि/ नौआरखव सँ मेनही धवि प्रधानमंत्री रिँक बोड  
 नेन खूरँ दौड़-फप आ नियमित 'आज' अखरावमे नोसँराद  
 निखेत बाजनेता आ अहसब सँ मँजूरी नेत एक रिँगहा  
 जमीनक एकत सँ यातायात राहनगमा रँनरौननि/ अचना घब  
 नगक गनीमान्ना केव चोड़ीकवण नेन ठौनरैयाक रैँठाकव कय  
 निखित सहमति नेननि,मुदा अचना नीजी खर्च सँ बाजानान साहके  
 ठैँकूठव सँ माँष्टिक काज आवँभ होओते १० ठैँनव माँष्टि खसिते  
 पूरँ आ पश्चिममे जनिजात नोकनि सँ काज राँधित कवरैँ  
 गेनाह/ से २७ हजार ङँठ उँघाएन फेँन बसुाकेँ एहन संकीर्ण  
 केने छन्हि जे मुर्दाक अथी धवि रौन भह कह नहिँ निकैँन  
 सकैँछ/ आ अदद डगहव रँनारैँक नेन राँधक दू रिँगहा खेत  
 रैँचने छुनाह/ जाहि ग्रामीण सरँ सँ जसमीन केँचा पौने  
 बहथि,सरँकेँ रैँवारैँवी फुनपवास अचना खर्च सँ पम्नूच कय रिँन

ভোজন কখনহি কেরানা দস্তারেজ রঁনা দেনথিন/ ঐ তবহক  
হাগক মূর্তি,সাদগী - সদরাহাবকে নোক বহন ছুথি সাহিহসেরী  
শ্রী নান দেৱ কামত জী/

শ্বাজিরিকা নেন দূগোঠ কাবী গায় পোসনে ছুথি,জাহিক দূধ শ্বা  
ঘী সঁ নগদী শ্বায় হোজত বহননি শ্বুছি/ মায - রাঁরুক খূঁ সেরা  
কযনথি/ সেরা এছ শ্বর্থমে ,তীনু ভায় ভিনভিনাউজ ভেনাসন্না  
কিছু মাসিক বাশি পাঁচগোঠে তয কয দেনকনি; সে ছোঠভায়  
তঁ ১০ সানধবি ঠুকঠুকী তকা দেননি, পবঁচ মমিনা ভায় ঠাকাক  
এরজমে নগেক ১০ কঠা খেত উঁরঁজারেঁ নে স্বমমা দেনকনি /  
সে ১০ সান রাঁরা- মেয়াঁক ম্বযনা ভেনোপব উঁরঁজা নহিঁ রাঁঠি  
নেত ছুহি/ তখন গ্ৰা রাঁত জে পৌনী - পসাবীকেঁ স্ননকা রঁদনা  
জযহ সানী ভবেত ছুথিন/ গ্ৰা সামঁজশ্বকে ভবত প্ৰেম ভেযাবী  
রাঁরত সমাজমে সবাহন গেন ছুঁন/

খবীফ,বর্রিঁ শ্বা গবমা শ্বন্নক খেতী-রাঁড়ীকে শ্বতিবিজ তবকাবী  
খেতী ও শ্বামরঁগীচা রাঁসকোঠি সঁ সেহো নগদী শ্বায় হিনকা

होङत बहनि श्रद्धि/ मधुरनी जिनाक ३७७ ग्राम पंचायतक पाँच  
 सब सँ अधिक गामक दर्शन कयने छथि/आ ताहि त्रमणशीनताक  
 काबणै खेती यथा - रौंग पठरँन हसन कठांग्र आ पसवी पड़न  
 जजातिक उगहाय ओ उगहन जाकन रौमके दौनी सरँस  
 पछुराए जागत बहनि/ सबहा,पावा, रौता सँ काँबकेँ उपद्र  
 सँ दोरँव हवानी म्मथय पड़ेन/ धवि धीव गाय आ रँनबक  
 उपद्र कम बहेछ/ जौन मजदूर केँ खासकय गहुँपाँगा ,गाहु  
 कठाय कवयरँनाके श्रगवरँव ठाका देनहा डुरँने बहि जाङन/  
 उँने- पौने दाममे किनकोशिशौगाहु,गम्हायव गाहु नेरँक  
 होय तँ ,हिनका पबोःमे रिँन कहनौ कार्ति,उंधावे न' जाङन  
 ,से सरँ ग्रामरासीक नजेतबमे एक हिन्मी सीन जेकाँ मानस  
 पठन पब श्रंकित भेन सन छेक/एतेक उँदावताक हद सीमा  
 रिबने कतौह ए धवाधाम पब उँदाहवण रँनन होय/  
 छोठभायकेँ दविभंगामे बाथि पठाए नेन मोहनजी,शिरनावायण

জী হাতে পহিনে খেত ভবনা পড়নৈন/ রাদমে নথুনি ভজাব  
 হাতে, সাড়ে ঞ্ঠ কঠা,ভগরানী হাতে সরাঁ তীন কঠা, স্বকন  
 পঁডিত হাতে দৃ কঠা, ম্বাবাবী ঞ্ঠ ঠিঠব হাতে নঙ কঠা, ঞ্ঠর্জুন  
 মহবাজ হাতে সাড়ে পাঁচ কঠা, মো০ ওস্নাম হাতে ঞ্ঠড়াঙ  
 কঠা,রঁমভোনী হাবে ঞ্ঠচায় কঠা, ঞ্ঠনূন হাতে পৌনে সাত কঠা,  
 রঁনোদ হাতে সরাঁ তীন কঠা,সতন পাসরান ঞ্ঠা মঁস্ববী জী হাতে  
 পৌনে দৃ কঠা জমীন সস্তা স্বভিস্তামে রঁচননি/ মোনমে বহনি  
 জে পটি- নিখ ঞ্ঠফসব রঁনত তঁ বামনাযণে রঁরঁ নহাতি ভায-  
 ভাতীজকে সদেত মদেত দেত বহত/ ম্বদা ঞ্ঠপন দৃনু ছোঁঠ  
 ভাযকে একো মাসক দবমাহাক যাচক নহিঁ ভেনাহ/

শ্রী কামত জীকে নৌ খেপ চুন্যার হাবরঁাক ঞ্ঠন্বভর ভেন ছুহি/  
 সন্ ২০০৬(প্রথম) ঞ্ঠাম চুন্যারমে ৮১- ফুনপবাস রিধানসভা ঞ্ঠেত্র  
 সঁ এক নেশনন পাঠীক সিঙ্গন হাখী ছাপ সঁ এম এন এ . রঁনয  
 নে ঠাঢ় ভেন বহখি/ ওহি নির্বাচনমে জন সরঁ উম্মীদরাব তঁ  
 জনতাক রঁীচ নোক ঞ্ঠভারন রঁাত বাখখি,ম্বদা নান দেরঁ জীক

चुनारी पर्चा एक पविपत्र रा प्रेस रिच्छपुति सन छपन बहनि/  
ओ मतदाता मानिकके रीच समाज स्वधावक दृष्टिये रोठ एहि  
तबहेँ माँगननि-:

(क)- जे राजि खपन रियाह, छोठ भायक रियाह आ रैँठाक  
रियाहमे कयागत सँ दान- दहेज माँग कयने होथि, नगदी डानी  
- तिनक गनौने होथि , जेँतकमे गाय - महीँस , खसूसी भेड़  
पौने छी से हमबा खपन नापाक रोठ देँ सँ पड़हेज भइ  
जाँड/

(ख) - जे कियो खपना पड़ोसी - ग्रामीण सँ धर्तता ओ ठकपनी  
कयने छी , तकबा खपन रोठ हमबा देँ सँ मनाली कबैत छी/

(ग)- हमबा जे मतदान कबरँ सेँ सँकन्प निख- शिजिभवि  
पवोपकावमे जीरन पर्यन्त नागन बहरँ/ ख्याणा .....

ऐ तबहेँ ओ जिना पविषद सदस्य नेन प्रादेशिक निर्वाचन केँ

सँ ४७ सँ आ १४- नौखारँखव पँचायतकेँ ग्राम कचहरी सँ

সবপঁচ পদক চুনার খা ১৪ নং রার্ডমে পঁচ কে উপচুনারমে  
 হাড়রাক শ্বনভর প্রাপ্ত কযনে ছুথি/ নৌখারখব পৈকুস০ কেব  
 শ্বধাঞ্চ পদ নেন সেহো কেৱঠ জাতি সঁ একনৌতা শ্বশ্বথী রঁনি  
 সর্দাধিক রোঠব বহেত হাবি তেসব স্থান পব নঠকি গেন  
 ছনাহ/ জুঠন ঘব কোনা চুনার নড়ি গবীরীকেঁ শ্বামব্রুণ কবেত  
 এক প্রয়োগ মানন জাওছ,সে হিনকো সঁগ সযহ রাত ভেন ছুহি/  
 একঠা শ্বাবো কাজ সঁ হিনক দাবিদ্রতা রঁঢ়ননি/ গামে গাম নোত  
 পীহানী হকাব শ্ববেত জিনা জরঁাব খা বাজাক বাজধানী ধবি  
 শ্বনেকো সভা সাসাওঠীমে নিযমিত সহভাগী রঁননা সঁ ঘবক  
 চিকস গীন হোওত বহননি/ ওনাকামে শ্বনেক শ্বরসব পব সরঁসঁ  
 রঁতিচটিকে দাতা রঁনন বহনাহ/ এক সূবদাস হনুমান মঁডীন  
 রঁনারঁয নগনাহ,তাহিমে ম্বখামঁত্রী শ্বারাস যোজনা সঁ ২৭ হজাব  
 বাশিমে সঁ গনৈতকান এক পঁচায়ত প্রতিনিধি পঁচ হজাব স্ননক  
 দারিঁ ধেনকনি/ কোসী রঁাহ সঁ গামপব শ্বযনাপব সমাঁগকে  
 গণনা কবেত বাশি ঘঠনা পব ও সমিতিকেঁ রেঁঠা নগাকেঁ শ্রাপয

नागनेक/ ताहि राठ सँ श्री कामतजी जागत ग्रा हाणोश स्वनि  
रँजनाह - जँ खहाँकमे कियो ७ हजार द' दिख तँ ठाँका खपने  
की कवरै? ओ कहनिथिन हनुमान जीक जयपुव सँ खानंद पाखव  
मूर्तिक स्ववङ्गा नेन ग्रीन नगरितम्/ से रँजवंगीरनी के नेन  
खपना सुव सँ ग्रीन देनथिन/ श्राफ - खभिशाप धवि पड़िकेँ  
बहनेक/

हविङ्गा उँछतव माधामिक रिद्वानयके +२ रँपीएससी .  
खध्यापक स्वभाष ह्माव जीके पोथी समीक्षा ग्रा- पाञ्चिक  
पत्रिका रिदेह मेथिनीमे १७-२-२०२३ग० मे ३४४म् खंक पढ़ने  
बही/ ओहिमे खपन रिनङ्गण तथा खा तह धविक राँतके खतिविज  
पोथीक रिषय सूचिकेँ गजपठ होय सँ रँचेराँक स्वमाँउ देने  
बहथि/ सन्ना१- जीरनी -१ शिर्षक यथा, १. खननु राँरूँ खमव  
बहय,२. दिनकव जीके उँकेर्ष ,३. मेनेजव सु० मखसुदन उँडावी  
जीक पूणा स्मवण,४. मेथिनी सेरी ननन राँरूँ : एक पविचय,७.

সকন সমাজকে চহেতা বামসকন,৬. স্ৰাধীনতা সেনানী কেঁ শঁ৩  
 - শঁ৩ নমন,৭. সাহিল বনে ঞ্বন্বপ নান মঁডন,৮. স্ৰনাম ধন্য  
 শিবোমলি,৯. হমব ঞ্বাদর্শ স্মৃতি শৈষ সূর্য নাবাষণ চৌধবী/  
 সন্ন ২.নিরঁক ১৩ পাঠ ১. ঞ্বনন্ত রাঁকু কেঁ সরঁ কবেত ছন্থি প্ৰণাম  
 ,২. উপন্যাস রঁনাম রাঁযোগ্ৰাফী,৩. এহি জগমে কে কতেক  
 মদেতগাব ,৪. করিবব রঁদ্রীনাথ বাযজীক ৩৭ম্ জন্মদিন,৩.  
 করি নানিহ,৬. রঁহির্ম্বখী কামেত কৌম,৭. কজবী রিশৈষ,৮.  
 মিথিনাক বোহিত যাদর,৯. মিথিনা বাজা'ক ঔচিহ : এক রিমর্শ  
 ,১০. যজি সঁগত রঁনাম তর্ক সঁগত,১১. রিদৃযাপতিক ঞ্বামেকথা  
 কেব দৃষ্টি রৌধ,১২. রেদরাস পূর্নিমা,১৩. সূদেশমে ঞ্বাশ্রমক  
 স্থাপনা, ১৪. সূ০ হবিনন্দন কামত জীক গাম- মঁগবৌনী ,১৩.  
 শ্ৰীমান শঁকব রাঁকু ওহিঠামক জিনেরী/ সন্ন ৩. পোখী সমীঞা  
 (২৩) পাঠ ৫০১. সঁ ২৩ ধবিকে শির্ষক ঐ তবহেঁ রর্ণমানা ঞ্বাধাব  
 পব সজেরাঁক প্ৰকাশককে কাজ বহনি, মৃদা চাবিখেপ  
 সঁস্কবণ/ মৃদ্রণ পন্নরী প্ৰকাশন নির্মনী সঁ ভেনাক রাদো

जसके तस देख दिरा दृष्टि केव पाठककेँ छुगन्ना अरथे होगत  
हेतनि/ अखब- अखब अमृत, पाठकीय ष्टिपपनी, आतंकित  
नेपथा डा० रूबद्धमदेर प्रसाद कायी उपेक्षित समाज केँ र्ठा  
देखारेत रर्णित बस, कथा एक पोथीक : हमर ठेन, हरबाज  
जीक ' पविचय ' एक अन्वशिनन, जय प्रकाश मंडन जीक गीत  
नर दिश, जगदीश प्रसाद मंडन जीक संचरण, ठीकापञ्चीक संग्राम,  
नावायण यादर जीक कथा संग्रह नरकी प्तोह, नन्द रिनास  
वायजीक कथा यात्रा श्वक, पाठकीय प्रतिज्ञिया, पोथी समीक्षा,  
पुस्तक समीक्षा, भोनूम- २ देराश्रमके मृनांकन, मेथिनी भाषामे  
एकठा दीर्घ करिताक पोथी मादे गम्भीर चर्चा कतेको  
अखराव -पत्रिकामे हिनके निखन छपना पव उपबोज पोथीक  
रिपणन र्ठनेक/ पविशिष्ट कपेँ ज्ठन रिदेह अ-पत्रिका अंक  
३८९ सँ साभाव कपेँ नीक पोथी समीक्षा ' दिरा- दृष्टि ' मेँ करि  
गंगाधर अरब हर्ष आ दार्शनिक वामेश्वर प्रसाद मंडन जीके

পতি প্ৰেবণা আ ভাৰনা জগেত ষ্টেক/ এক কচবী পাঁতি দ্ৰুৱা  
 স্বষ্টি -:

স্বাবে বমা নান দেৱ জীক গ্ৰ পোখী

গ্নবী'ক ফূনৰে ঐ হবী .....!!

হিনক স্বনেকো ৰিধামে কতেকো প্ৰস্তুক পাণ্ডুনিপি দেখৰাঁক  
 স্বৰসব ভেঠন স্বষ্টি/ প্ৰকাণ্ড গ্ৰতি ' গঁহকী নজোঁব' কেব পীডীএফ  
 সোশন মীডিয়া পব পঠৰাঁক নিনসা সেহো প্ববা ভেন স্বষ্টি/  
 এহিমে তীন সন্মমে নিন্মাকিত পাঠ শিৰ্ষক দেন গেন ষ্টেক/  
 জেনাকি -:

স্বনখ জগাৱেঁত কৰ্পূবী ঠাফব জী, স্বাধনিক চিষ্টী - গ্ৰ মেন,  
 স্বাঠ প্ববস্কাব স্বা স্ববেন্দ্ব, এক স্বধ্যামিক পথকে পথিক :  
 সূতঁত্ৰতা সেনানীক জয়-জয়, ঔষধীয় গ্বণ মৌধমে, কথাকাব  
 স্বশোক মাদে, গড়চিবৌনী 'ক স্মবণ, জাতিগত স্বাকৰ্ষণ,  
 জন্মদিন শতাল্লী সমাবোহ - পঠনা, জীৱনী স্বন্বৱাদকে এক  
 পোখী, ডা০ বামভবোস কাপড়ী ' ভ্ৰমব', এক ৰাজিৱ ডা০(প্ৰো০)

वाम अरताव यादर रिशेषीक मादे, डा० उमेश मंडन : एक  
 मैथिनी अतिमानी, नबेन्दव मा जीक स्मरण, प्रसिद्ध साहित्यकार  
 हर्षीशुबनाथ बेण्ठक स्मरण, पानक रवेर, हगोनमे मिथिना  
 बाजा कहिया धवि, मलिपदमक' शताब्दी 'क राद, मिथिना स्रुंठेठे  
 युनियन केव हस्र, मिथिना रिहति: खुशी नान राँरू, मखानक गण  
 रूमू , मिथिनामे माडक बोजगाव, मून अति पिड्डाक आवरण  
 हक हड़पन गेन, सबौती सपृत : खुशी राँरूक उपनरुधि , सरुशी  
 बासरिहारी दासजी : एक रिषय कीर्तन छाता, श्रमिक हीतके  
 उपाय अश्रय, श्रीमान मोन पडेते छथि, साहित्य अकादमी  
 पबेखनक पेन ड्रागरमे पृथ्वी केँ, महामहिम धनिक नान मंडन  
 अदि। हिनक पविचयके संग पहिन बचना राँरूत प्रो० बरिन्दव  
 हमार चौधरी जीके डायबेकुठरीमे पठन जा सकैत अछि।  
 अन्नराद कार्यके दिशामे सेहो शेष जीरन नामे हिन्दीमे ठूठ  
 गज(मैथिनी) केव प्रकाश पोथी अरिँ बहनहि अछि।

হম কহি সকেঁত ছী শ্ৰী কামত জীক নেখন শৌনী মৌথিনী ভাষা  
মানক তয কবেঁযমে ঞ্ছি শৌদকে জগহ 'য' ঞ্ছাওব হেন কেব  
প্ৰচনন তথা তহন - তখন কেব জগহ 'তৰ' ঞ্ছা নেন কেব জগহ-  
ন ঞ্ছাওব থীক কেব জগহ ছী কেব প্ৰয়োগ ঠেঁঠী মৌথিনী জে  
মিথিনাঁচনকে ১০ প্ৰতিশত ঞ্ছাৰাদীক জনৰাণী মানি ,জে কি  
ভাষাযী ঞ্ছামৌ ছী মহৌত নেন জেৰাঁক চাহী।

-প্ৰীতি ক্ৰমাৰী,ৰী.এ. ঞ্ছানৰ্ছ (ৰী.এড০)

**ঞপন মঁতৰা [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) পব পঠাউ।**

পত্ৰ

৩.১.জগদানন্দ ম্যা মন্ব -তীনঠী গজন

৩.২.জগদানন্দ ম্যা মন্ব -ৰীসঠী হাণ্ণ

৩.৩.বৰীন্দ্ব নাবাষণ মিশ্ৰ-প্ৰদূষণক প্ৰহাব

३.१. जगदानन्द मा मन्व -तीनष्ठा गजन



ଜଗଦାନନ୍ଦ ମା ଢମନ୍ତ

ତୀନଠା ଗଜନ

/

କୀ ରନର ଚାହେଁ ଛୁନୋଁ ହମ କି ରନି ଗେନୋଁ

ପ୍ରେମମେ ପ୍ରିୟତମ ଶ୍ରୀ କେବ ସନି ଗେନୋଁ

ଆଶ ଜେ ପବିରାବକେଁ ଶ୍ରୀ ନହି ବହନେ

ଜେରଁ ଖାନୀ ଦେଖ ସରଁ ହୀନ ଜନି ଗେନେଁ

ସ୍ଵଧି ବହନ ନେଁ ରୋମ ନଦନେ ଶ୍ରୀପନ ହମବା

ପ୍ରେମ କନିକୋ ଭେଠତେ ହମ ତଁ କନି ଗେନୋଁ

ଗାମ ସଦିଖନ ଧୂନମେ ଶ୍ରୀ ଝି ରସନ ହମ୍‌ବ

ଛନ ନିଖନ ପବଦେଶକେ ଗାମ ମନି ଗେନୋଁ

नेह अर्पन आरिं ने नेह ठा बहने

मोनमे रिसि ❖मन्न❖ हभव साँस गनि गेनौं

(रिहवे कनीरिं, मात्राक्रम 2122-2122-1222)

2

पोथीक तव दरिं पट्टुआ सगव मवि गेन

जे प्रेममे डूरन जीरिते तवि गेन

सदिखन जतय मनमे छन डवक आतंक

आरिंते आँके नर हून हन हवि गेन

धवती तपन छन जे पानि रिंन तवसेत

हथियाक हँसिते रँवखा निमन पवि गेन

आनक स्वखक रिंता रँस अर्पन द्वखसँ

ଡାହାଁ କତେକୋ ଘବ ତେନ ରିନ ଜବି ଗେନ

ପାଥବାସଁ ❖ମନ୍ତ❖ ଶାଞ୍ଜବ ରିନି ବହନ ଶ୍ଚି ଖାରଁ

ତୋବାସଁ ଜେ ମୃଗନସନୀ ନଜବି ନବି ଗେନ

(ରୈହବେ ସନୀମ, ମାତ୍ରାଞ୍ଜମ - 2212-2221-2221)

3

ତାଢ଼ିମେ କତଏ ମଦ ଜେ ଚାହି ଜୀରୈ ନେନ

ମାନ୍ନବମେ ହନ ଜୀରନ ଚାହି ଜେ ଚିଧେ ନେନ

ରାଁକୀ ନେ ତାଢ଼ିଏଠା ଠୁଠନ ମୋନକ ନେନ

ଜୀରନମେ ଏକବ ରାନ୍ଦୋ ରଢ଼ ଛେ ପୀରୈ ନେନ

ସିସ୍ଠମମେ ହାଠନ ଛେ ମେଘସଁ ଧବତୀ ଧବି କୋଡ଼

ଏତେ କତସଁ ଦବଜୀ ଗ୍ରା ସିସ୍ଠମ ସୀରୈ ନେନ

जीतरँ हावरँ सदिखन नगने छै जीरन संग

हेबसँ उठि कोशिश नमहब हेते जीते नेन

मोनसँ कवरैे मन्व् अल्पन जीरनकेँ तेयाव

कर्मक रीया सगबो रँल्लते अछि छींटे नेन

(रँहबे रिदेह, मात्राक्रम 2222-2222-222-21)

-जगदानन्द या मन्व् मो० न० 9212-46-1006

अपन मंतरा [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) पब पठाउ।

३.२.जगदानन्द या मन्व् -रिसिंठा हागह



জগদানন্দ মা ❖মন্ত্র❖

রীসিষ্ঠা হাঙা

১

সঁগে ন গেন

হমব নানী দাঙ

ঠেকী সমাঁঠ

২

পিয়বগব

মাঁছ ভাতক ভোজ

গাম-গামমে

৩

भोवका सूर्य

श्वज्वक नोक नेन

द्वर्नड छेक

४

मनमोहक

कन कन कवेत

गंगक धावा

७

केहन माया

उज्जव कावी धावा

संग रूहेत

७

चाँदी नगेए

ଆଞ୍ଜବ ପବତକ

ଓସକ ରୁଁଦ

୧

ପୋଖବି ଘାଠ

ତବିସବ କଜବୀ

ନୋଡ଼େ ମୋନକେଁ

୪

ମନୋର୍ବଜନ

କମ ନହି ହୋସତ

ଚୁନାର ଧବି

୯

ଗବୀର୍ ନେତା

ଅଧିବ ରିନି ଗେନେ

দেখতে কোনা

১০

যৌ সবকাব

গবীরৌকেঁ স্বনরৌ

জীতনা রাঁদ

১১

হমবে পিসূ

ভোঠ হমবে দেন

নোকতঁএমে

১২

উপদেশে নৈ

শিঃগা চালী হমবা

নেতা দেত নৈ

୧୩

ନେତାକ ରୈଠା

ନେତେ କିଏ ରୈନେ ଛେ

ନୋକର୍ତ୍ତଂଏମେ

୧୪

ନେତା ରୈନିତେ

ସଭ ପାପ ଧୋରୈନେ

କେହନ ଶ୍ୟାସ

୧୭

ବାଜନୀତିମେ

ନୀତି ନେ ରୈକୀ ସଭ

ଭ ବହନ ଛେ

୧୬

ପାଁଚେ ରର୍ଷମେ

ରୌନେବୋ କୋନା ଏନୈ

ସ୍ଵାଧିଆ ଜୀକ

୧୭

ସହକ ମୋନେ

ସ୍ଵୃଷ୍ଟ ଖାସନପବ

ପସବନ ଛୈ

୧୮

ଜନତା ଶ୍ଵାନ୍ତି

ନେତାକ ନଜବିମେ

ରୁଁସୀକ ରୌଡ଼

୧୯

রঁড় রঁহানা

পাগ জাতি তখবে



ভোঠ রঁচক

২০

কে খপন ছে

সভ মৌকাকৈঁ যাব

বাজনীতিমে

জগদানন্দ মা  মন্ব 

মো০ ন০ ৯২১২-৪৬-১০০৬

খপন মঁতরা [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) পব পঠাউ।

### ୩.୩.ବରୀନ୍ଦ୍ର ନାବାଞ୍ଚ ମିଶ୍ର-ପ୍ରଦୂଷକ ପ୍ରତାପ



ବରୀନ୍ଦ୍ର ନାବାଞ୍ଚ ମିଶ୍ର

ପ୍ରଦୂଷକ ପ୍ରତାପ

ତେଜାବ ସାନ ରାଠ

ଜୌଁ ଘୂବି ଶ୍ଵାଏରଁ ଏହି ପୃଥିବିବ

ତକୈତ ଶ୍ଵପନ ନୋକସଭକୈଁ

ତখন କେ ଭେଠିତ?

ସାଗତ ଗ୍ରା ଦ୍ଵନିଶ୍ଵା

ରଁନି ଗେନ ବହତ ମରୁହ୍ଵମି

ନହି ବହତ କତମ୍ମ

ପାନିକ ଏକ୍ଵକୋ ରୁଁଦ

ଧହ-ଧହ ଜବୈତ ଧବତୀ

ଶ୍ଵଚାନକ ହୁଠି ଗେନ

ଶଞ୍ଜିଶାନୀ ଶ୍ଵାଂରିକ ରଁମସଁ

ନିକନୈତ ଶ୍ଵଜସ୍ତ୍ର ଓଁଷ୍ଵମାସଁ

ଢ୍ଵାଓବ ରଁନି ଗେନ ସଭକିଢ୍ଵ

ସମ୍ମଦ୍ର ପର୍ଯନ୍ତ ସ୍ଵଧାଏନ ବହତ

ଦବାବି ହ୍ଵାଠି ଗେନ ବହତ ସୌସେ

ଧଞ୍ଵ-ଧଞ୍ଵ ଭେନ ଧବତୀ

ନାହିଁ ଦେଖାଗତ ବହତ ସୂର୍ଯ୍ୟ  
ସୌଁସେ ଧୁଆଁ-ଧୁଆଁ ଭେନ ବହତ  
ମନ୍ଦୁକ୍ତକ ତୁଁ ରାତେ କୋନ  
ନାହିଁ ରାଁଚତ କୋନୋ ଜୀର-ଜନ୍ତୁ  
କେ କବତ କବ୍ଦୀ ଏନ୍ଦନ  
ହାକବୋସ କବୈତ ପ୍ରଗତି  
ଭସ୍ମ ଭଏ ଗେନ ବହତ ସଭକିନ୍ତୁ  
ପତା ନାହିଁ ପୃଥିବୀ ଶାନ୍ତିର  
ବାହିଓ ସକତ କି ନାହିଁ  
ହେବ ଶ୍ଵେତାକ ନିର୍ମିତ  
ସୁନ୍ଦର-ସୁନ୍ଦର ମହେନ ସଭକ  
ନାହିଁ ବହତ ନାମୋନିସାନ  
କତଏ ତକରୁନି ଶ୍ଵପନ ରିଂଶଜକେଁ?  
ଓ ସଭ ତୁଁ କାହିଁଶା ନେ

ভএ গেন বহতাহ কান কনরিত  
নহি ভোগি সকতাহ কোনো স্বখ  
নহি দেখি সকতাহ  
পৃথ্বীপব সহজ স্বনভ  
হবীতিমাক ঋন্বপম সৌঁদর্য  
সোচিও, ও সভ কী কহতাহ  
কেহন হুনাহ হমব পূর্জ  
জে মিথ্যা ঋঁকাবরশ  
নহি রঁচা সকনাহ কিছুও  
নাবামেক সোচসঁ ঋরহ  
নঙ কএ দেননি সভ কিছু  
ঝারৌ সম্হবি জাউ  
ছোডু দ্বাগ্রহ  
রঁচা নিঋ পৃথ্বীকেঁ  
প্রদূষণক প্রহাবসঁ

रँहा दिश्व समुद्रमे

सभठा श्वाणररक हथरयाव

जे रँनर गेन श्छर

शैऒ्र मानर समाजरकेँ

श्वारँ रँूमनरँ

केहन रँुफरमान ङुनारह पूरँजर

पोषण करेतेत बहनारह प्रश्रतरक

सरँऒ्र बहए शीतर ओ सुख

श्वारँओ जरगतु, समुहवर जरथु

करवथु ढाग वारुसरी प्ररुतरकेँ

जररँथु संयमरत जरतरँ-ततररँसँ

प्रश्रतरक संवऒुण करेतेत

सोपर जरथु रसुंधवर

एहरनार हवरयव करँऒन

शुगरनर डररररररररर/

ॡॡ/ॡ/ॡ०ॡॡ

शुडन ररतरर [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) डर डरररर/

*Maithili Literature in English Translation*

ॡ.ॡ.ॡररर-ॡॡॡरर डरररर डरररर (Original Maithili Short Story) Rameshwar Prasad Mandal (English Translation)

*4.1.Service-Jagdish Prasad Mandal (Original Maithili Short Story) Rameshwar Prasad Mandal (English Translation)*



*Jagdish Prasad Mandal (Original Maithili Short Story)*



**Rameshwar Prasad Mandal (English Translation)**

### **Service**

*Early in the morning, when Bhushan Uncle went out for his walk, he saw from a distance that on both sides of the road, east and west, groups of women were talking among themselves. He kept walking forward, though in his mind the thought had already taken shape that something must have happened in the village and it was this incident the women were discussing.*

*As he walked along the road with his eyes fixed downward, watching the path closely, his ears were pricked, ready to catch some hint of the matter. Yet when he was still a little way off, the women continued their chatter, but as soon as he came near, they all fell silent. Thus, not a word of the conversation reached his*

ears.

Even though he had heard nothing, his mind kept turning over the possible nature of the incident being discussed. By the time he reached the main road leading out of the settlement, there was still no clue.

That morning, Bhushan Uncle was walking alone, with no companion to exchange words with. As usual, he went as far as the village's southern boundary and then turned back home daily. On the way, he did meet two or three men and women, but they showed no sign of speaking to him, and he could not bring himself to ask them anything.

When he reached home after his walk, his curiosity had only grown stronger. The reason was the thought that if most of the people of the village already knew the news or the talk, then why was he still in the dark? Yet another thought came to him, softening his self-reproach: even though humanity has an immense history, there are such animals or creatures in the forest that a person may never have seen. So if he too did not yet know about some event in the village, what great loss was there in that? Still, the thought came to Bhushan Uncle that since this was a village matter, it was indeed surprising that he had not heard of it yet. After reaching

home, another idea crossed his mind: even if he had not heard, his wife must have. Why not simply ask her and find out? Then again, he told himself, his wife was no different from anyone else. If he repeated to someone what she told him, and it turned out to be untrue, would he not be blamed for spreading it?

Lost in such weighing of options, Bhushan Uncle was sitting on a chair in the doorway when he saw Sumarital coming up the road from south to north. As soon as Sumarital came near, Bhushan Uncle called out-

◆ Sumarit, you seem to have forgotten us completely! ◆

Since Sumarital regarded Bhushan Uncle with respect, he came straight to the doorway without saying anything, sat down on another chair, and replied- ◆ Uncle, what can I say? I spend the whole day worrying about matters at home. ◆

Bhushan Uncle said- ◆ You worry unnecessarily. Think about how the household can move forward and put your efforts into that work. Worry alone will bring nothing. ◆

Agreeing with him, Sumarital said- ◆ Uncle, that is exactly what I try to think, but the family members are

such that they never let my thoughts stay steady, nor let my mind be at peace.❖

Without pursuing the subject further, Bhushan Uncle said-

❖ Sumarit, as long as you live and are part of family life, there will always be entanglements. So why are you getting unceasing worried for it? ❖

Finally Sumaritalal replied-

❖ Yes, Uncle, my own heart says the same, but sometimes it happens that I get caught in some sort of web for no reason, otherwise I would simply leave the house. ❖

Hearing this, Bhushan Uncle laughed and said-

❖ Sumarit, even if you leave home, life will still go on.

What will you do then? ❖

Admitting himself at a loss, Sumaritalal said-

❖ That's exactly why I don't leave. ❖

Changing the subject, Bhushan Uncle asked- ❖ Sumarit,

has any new incident taken place in the village? ❖

Sumarital replied-

❖ I have heard a faint hint of something, but I don't know it clearly. ❖

Bhushan Uncle asked- ❖ What hint have you heard? ❖

Just then, by coincidence, Janaklal was walking down the road from north to south. Seeing him, Sumarital said-

❖ Uncle, now we will know the whole story. ❖

Janaklal was known in the village as someone who was always in the thick of every bit of news, spending his days stirring conversations and spreading talk. As soon as he came in front of the doorway, Bhushan Uncle called out,

❖ Janak, come here for a moment before you go any further. ❖

Janaklal stepped up to the doorway and said-

❖ Uncle, my respects to you. ❖

❖ Stay well, ❖ Bhushan Uncle replied. ❖ Janak, what is

the news in the village? ❖

❖ Uncle, a great injustice has taken place, ❖ Janaklal answered.

Hearing the words ❖ a great injustice, ❖ Bhushan Uncle looked startled and asked- ❖ What great injustice has taken place, Janak? ❖

Janaklal said- ❖ Do you know Varaspati? ❖

❖ That same Varaspati who lives in Assam? ❖ Bhushan Uncle asked.

Nodding, Janaklal replied- ❖ Yes, yes, the same Varaspati. ❖

❖ What happened to him? ❖ Bhushan Uncle asked.

Janaklal began- ❖ It has been nearly five years now. Before that time, he used to come to the village every year and send money home every month, enough to keep his family going. ❖

Sumarital interrupted- ❖Who is in his family?❖

❖His parents have passed away,❖ Janaklal said. ❖Only his wife and a daughter of about four and a half years are there.❖

❖What happened to him then?❖ Bhushan Uncle asked again.

❖Uncle, I will tell you everything as I understand it,❖ Janaklal replied.

Sumarital broke in again-

❖Janak bhai, your house is right next to Varaspati❖s, so you must also know how much he spend on things like salt and oil.❖

Janaklal said-

❖Uncle, for the last five years Varaspati has neither come to the village nor sent a single rupee.❖

Hearing Janaklal❖s account, Bhushan Uncle began to weigh the matter in his mind. If Varaspati❖s family,

meaning his wife and child, were living in the village and yet he neither came home nor sent money, then how was the family managing? The more Bhushan Uncle thought, the more different questions arose. He decided it would be best to first hear from Janaklal exactly what he knew. Only when one reaches even a small part of the root of a problem can it be properly understood. Speaking without knowing could easily turn out to be wrong.

Steadying his thoughts, Bhushan Uncle said-

◆Janak, tell me what you know.◆

Janaklal replied-

◆Uncle, I have not seen it with my own eyes, but I have certainly heard it with my own ears.◆

Sumaritalal broke in-

◆Are you giving testimony in court now, the way you keep hedging? Just say what you know.◆

Janaklal said- ◆Sumarit bhai, I have heard that Varaspati is living with a woman in Assam and has even married her.◆

Laughing, Bhushan Uncle said- ❖Janak, for many years I have heard that the tribal women in Assam turn our menfolk into cattle, tie them to a peg in the fields for grazing all day long and when they themselves return home in the evening, they bring the men back too, and at home treat them again like men.❖

Janaklal, who had also heard such talk from old folks, said- ❖Uncle, I have heard the same, so I agree with you, but I have not seen it myself.❖

Bhushan Uncle asked- ❖If Varaspati has not sent money for four or five years, then how is his family managing?❖

Janaklal answered- ❖Uncle, his wife is quick-witted. Sometimes she does a bit of sowing and planting; otherwise she spends most of her time gossiping here and there.❖

Bhushan Uncle said- ❖All right, she can do what she likes. That is not the point. Tell me what happened today.❖

Janaklal said- ❖The last time Varaspati left the village, his wife was pregnant. About seven or eight months after he had gone, a daughter was born. She is a very beautiful child.❖

Bhushan Uncle thought to himself that such a thing was certainly possible. Carrying the thought forward, he asked- ❖Was the child brought up entirely by his wife, meaning Varaspati❖s wife?❖

❖Yes,❖ Janaklal replied.

Sumarital interjected-

❖All right, she did what she did. But what exactly happened today?❖

With a look of surprise, Janaklal said-

❖Sumarit bhai, sometime during the night, that woman left the little girl sleeping and ran away from the house.❖

Bhushan Uncle asked- ❖Did she run away alone, or with

some man? ❖

Janaklal answered- ❖ Uncle, it is not yet certain whether she went with anyone, but what is clear is that she has left home. In the morning, when Marni, meaning Varaspati❖s daughter, woke up and did not see her mother, she stayed quiet for a while but then began to cry, and she has been crying ever since.❖

Hearing this news, Bhushan Uncle called out to his wife. When she came and stood in front of him, she asked-

❖What is it?❖

Bhushan Uncle said- ❖Let us all go and bring that child, Marni, here to our home and take care of her. She is a girl, and when the time comes for her marriage, we will give her to someone as our own.❖

Hearing his words, his wife stood silently. Bhushan Uncle then turned to Sumarital and asked- ❖Sumarit, what do you think?❖

Sumarital replied- ❖Uncle, there is no greater religion

than serving another human being. I support your thought not just fully but with all my heart.❖

❖And you, Janak, what do you say?❖ Bhushan Uncle asked.

Janaklal answered- ❖Uncle, what you are thinking is exactly what I am thinking as well.❖

ସ୍ଵପନ ମିତରା [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) ପବ ପଠାଉ ।

४

